व्याकरण शाखी

हिंदी व्याकरण

9 कोर्स 'A'

उत्तरमाला

डॉ॰ प्रीति 'सागर'
एम॰ए॰, पीएच॰डी॰

Harbour Press
INTERNATIONAL

अपठित गद्यांश

26. (क) पाठक कथा में रोचकता के साथ जीव-जगत का प्रतिबिंब देखना चाहता है।
(ख) लेखक को सदैव घटनाओं की संभाव्यता के प्रति सचेत रहना चाहिए।
(ग) उपन्यास में लेखक की ही भाँति पाठकों का भी 'अहम्' से अनादि लगाव होता है। जग-जीवन में जो घटनाएँ घटित न हो सकें, उनका वर्णन इस लगाव के लिए घातक होता है।
(घ) किसी रचना को पाठक द्वारा तब पढ़ा जाता है जब रचनाओं में रोचकता और मौलिकता का समावेश होता है।
(ङ) अहम् – मुख्य, महत्वपूर्ण।
(च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक – "उपन्यास"।

27. (क) मित्रता की धुन छात्र-जीवन के समय सवार रहती है।
(ख) बाल-मैत्री में मधुरता और अनुरक्ति का भाव होता है, वह अन्यत्र दुर्लभ होता है।
(ग) युवावस्था की मित्रता शांत, गंभीर और दृढ़ होती है।
(घ) बाल्यावस्था की मित्रता कल्पनाओं से युक्त होती हैं एवं युवावस्था की मित्रता कल्पना लोक से निकलकर वास्तविकता की धरातल पर आ जाता है।
(ङ) 'ता' प्रत्यय।
(च) शीर्षक– "मित्रता"।

28. (क) घाना पक्षी विहार 'आखेट-वन' के रूप में विकसित किया गया था।
(ख) घाना पक्षी विहार राजस्थान सरकार के द्वारा 13 मार्च, 1956 को पक्षी अभयारण्य घोषित किया गाया।
(ग) घाना पक्षी-विहार वर्षा ऋतु के आरंभ में वसंत ऋतु के अंत तक सैलानियों का स्वर्ग बन जाता है।
(घ) विशेषज्ञों द्वारा घाना पक्षी विहार में पक्षियों की 375 जातियों की गणना की गई है।
(ङ) साइबेरिया, ताशभंद, मंगोलिया तिब्बत, चीन, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, ईरान, जर्मनी आदि देशों से पक्षी घाना पक्षी विहार में सरडियाँ बिहाने आते हैं।
(च) शीर्षक– "पक्षी-अभ्यारण्य"।

29. (क) अमरकंटक से नर्मदा के निकलने के बाद 154 मील की दूरी पर भेड़ाघाट आया।
(ख) भेड़ाघाट में भृगु ऋषि तपस्या करते थे।
(ग) नर्मदा के पानी में खड़ी विशाल चट्टानों की यह विशेषता है कि वह सदियों से सरदी, गरमी और बरसात को सहती आ रही है किंतु झुकना नहीं जानती। चाँद के आते ही चाँद जैसी चमक जाती और सूरज के आते ही तप उठती है।
(घ) नर्मदा नदी की कुल यात्रा 800 मील की है।
(ङ) ग्वारीघाट तथा तिलवाड़ा घाट।
(च) शीर्षक– "नर्मदा की चट्टानें"।

30. (क) जीवन की रिक्तता तब छोटी लगने लगती है जब हमें विधाता किसी ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है।
(ख) विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी ठहराना कदापि उचित नहीं है, क्योंकि विधाता ही तो हमें उन विपत्ति की घड़ी में हमारी सहायता कर हमें उन पलों से लड़ना और उससे जीतने की शक्ति प्रदान करते हैं।
(ग) लेखक ने जिस अभिशप्त काया को देखा, वह विधाता के दिए गए कठोरतम दंड झेल रही थी, किंतु उसे वह नतमस्तक हो आनंद मुद्रा में झेल रही थी, विधाता को कोसकर नहीं।

(घ) मनुष्य अपने जीवन में अकस्मात अकारण दंडित होने का दोष विधाता को ही देता है।

(ङ) विधाता कभी-कभी अचानक ऐसे व्यक्ति से मिला देता है जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है।

(च) शीर्षक– "विधाता"।

31. (क) वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। वीरता एक प्रकार की अंत:प्रेरणा है।

(ख) वीरता की अंत:प्रेरणा का विकास होने पर एक नई रौनक, एक नया रंग, एक नई बहार, एक नई प्रभुता संसार में छा गई।

(ग) सत्य और जीवन के गूढ़ तत्वों की खोज़ के लिए महात्मा बुद्ध जैसे लोग प्रसिद्ध हैं।

(घ) वीरता देशकाल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई, तभी एक नया स्वरूप लेकर आई, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गए।

(ङ) वीर– मूलशब्द
ता– प्रत्यम

(च) शीर्षक– "वीरता"।

32. (क) आज समाज में बड़े बुजुर्गों के प्रति मान-सम्मान में कभी आती जा रही है। संतानें धूर्तता एवं स्वार्थ के वशीभूत होकर इस बदलाव को बढ़ावा दे रही हैं।

(ख) आज भी संतानें माता-पिता के आज्ञा का अनुसरण करना तो दूर उनका विरोध करने में भी नहीं हिचकते। आज इस युग में बड़ों के द्वारा दिए गए आदर्श एवं उनकी शिक्षाएँ ढेर होती जा रही है।

(ग) समाज में आ रहे बदलाव का महत्वपूर्ण कारण है, पाश्चात्य संस्कृति को अपनाना। जहाँ संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकल या एकांकी परिवार को अधिक महत्व दिया जाता है।

(घ) आज की संतानें माता-पिता को घर की रखवाली करने वाले चौकीदार और घर के काम करने वाले नौकरों से कम नहीं समझती हैं।

(ङ) समाज के लोगों द्वारा पाश्यात्प संस्कृति को अपनाना समाज बदलाव को माना जा सकता है।

(च) शीर्षक– "आदर्शों का हनन"।

33. (क) बारूद का अविष्कार चीन में आज से करीब डेढ़ हजार साल पहले हुआ।

(ख) भारतीयों को बारूद की जानकारी चीनियों से मिली।

(ग) भारत में आतिशबाज़ी के पटाखों का सर्वाधिक प्रयोग दक्षिण भारत में होता है।

(घ) रॉकेट के लिए लोहे के खोलों का इस्तेमाल भारत देश की खोज़ है।

(ङ) अविष्कार–नई खोज

(च) शीर्षक– "बारूद की खोज"।

34. (क) ग्रामोन्नति का कार्य राष्ट्रोत्थान का कार्य है।

(ख) इस गद्यांश का मूल भाव है, भारत के गाँवों में नवचेतना और नवशक्ति का संचार एवं देश को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करना।

(ग) भारत की आत्मा गाँवों में बसती है जिस प्रकार आत्मा के स्वस्थ होने पर शरीर स्वस्थ रहता है उसी प्रकार गाँवों की उन्नति जब होगी, तब भारत का वास्तविक उत्थान होगा।

(घ) 'भारतमाता ग्रामवासिनी' कविवर सुमित्रानंद पंत जी ने कहा है।

(ङ) भारत के गाँव भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक हैं।

(च) शीर्षक– "भारतवर्ष"।

35. (क) डॉ॰ कलाम एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाले वैज्ञानिक थे और वे भारत को विकसित देश बनाने का सपना सँजोए हुए थे।

(ख) डॉ॰ कलाम को सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न, पद्मभूषण तथा पद्मविभूषण से विभूषित किया गया।

(ग) डॉ॰ कलाम को कविताएँ लिखना, वीणा बजाना तथा बच्चों के साथ रहना पसंद था।

(घ) राष्ट्रपति पद की शपथ लेते समय उन्होंने कबीरदास के उन दोहे का उल्लेख किया था– “काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।”

(ङ) कर्मठ + अकर्मणय

(च) शीर्षक– “प्रतिभाशाली डॉ. कलाम”।

36. (क) नेपोलियन को हराने वाला महान योद्धा ड्यूक ऑफ़ वेलिंग्टन था। वह भारतीय टीपू सुल्तान से हारकर भागा था।

(ख) आर्थर वेलेज़ली की पराजय का मुख्य कारण था, टीपू सुल्तान जैसे योद्धा से टकराना।

(ग) अंग्रेज़ फ़ौज श्रीरंगपट्टम तक पहुँच तो गए लेकिन किले तक पहुँचना आसान नहीं था, सुल्तान की योजना इतनी मज़बूत थी कि अंग्रेज़ फ़ौज पराजित हो गई।

(घ) टीपू सुल्तान के रॉकेटधारी सैनिक किले के दक्षिण में सुलतानपट गाँव के पास ऊँचे टीले पर खड़े थे।

(ङ) अंग्रेज़ आज भी आर्थर वेलेज़जी को एक महान योद्धा के रूप में स्मरण करते हैं।

(च) शीर्षक– “टीपू सुल्तान”।

37. (क) जो बात बीत चुकी है उस पर पश्चाताप करना इसलिए व्यर्थ होता है, क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं होता।

(ख) मानव का परम कर्तव्य है– उचित समय पर निर्णय लेना और सफलता का मूल मंत्र है– विचारपूर्वक आगे बढ़ना।

(ग) गद्यांश में समय की यह विशेषता बताई गई है कि जिस तरह मुँह से निकली बात और धनुष से छूटा तीर वापस नहीं आते उसी तरह बीता समय भी कभी लौटकर नहीं आता है।

(घ) कैकेयी का अविवेकपूर्ण निर्णय था– राजा दशरथ से दो वरदान माँगना। उनमें पहला था– भरत को अयोध्या का राज सिंहासन और दूसरा राम को चौदह वर्ष का वनवास।

(ङ) बिना सोच-विचार किए कार्य करने का परिणाम अमंगलकारी होता है।

(च) गद्यांश का शीर्षक है– “बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछताय”।

38. (क) लोग प्रायः गीता के इस उपदेश की चर्चा करते हैं कि कर्म करते रहें, पर फल की इच्छा न करें।

(ख) इस गद्यांश में यह कहा गया है कि कर्म करते हुए जीवन संतोष या आनंद में बीतता है। इसके बाद भी फल न मिलने पर यह पछतावा नहीं रहता कि हमने कर्म नहीं किया।

(ग) नहीं, फल पहले से बना-बनाया कोई पदार्थ नहीं होता है क्योंकि अनुकूल प्रयत्न, कर्म करने के अनुसार ही फल के एक-एक अंग की योजना होती है। रोगी को आनंद तब प्राप्त होता है जब सही ढंग से उसका उपचार किया जाता है।

(घ) प्रयत्न और अप्रयत्न की अवस्था में यह अंतर होता है कि प्रयत्न की अवस्था में जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीतता है, अप्रयत्न की दिशा में उतना ही अंश शोक और दुख में कटता है।

(ङ) आत्मग्लानि के दुख से वह बचा रहेगा, जो किसी कार्य को करने के लिए पूरा-पूरा प्रयास करता है।

(च) गद्यांश का शीर्षक है– “प्रयत्न का सुखद फल”।

39. (क) जनसंख्या अत्यंत तेज़ी से बढ़ी है। उसके मुख्यतः दो कारण हैं– (i) वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा प्राकृतिक आपदाओं पर नियंत्रण हो जाना। (ii) मृत्युदर घट जाना, पर जन्मदर में कमी न आना।

(ख) भारत जैसे विकासशील देशों में सभी योजनाएँ इसलिए विफल हो जाती हैं क्योंकि यहाँ जनसंख्या में तेज़ी से वृद्धि हो रही है। जितने लोगों के लिए योजनाएँ बनाई जाती हैं, उसे लागू करते समय लोगों की संख्या में वृद्धि हो चुकी होती है।

(ग) आँकड़ों के अनुसार यदि विश्व की जनसंख्या साढ़े सात अरब हो गई तो इतनी विशाल जनसंख्या के लिए खान-पान, वस्त्र और निवास की समुचित व्यवस्था करने की कठिनाई उत्पन्न हो जाएगी।

(घ) आबादी को नियंत्रित करने के लिए प्रकृति महामारी, भूकंप और बाढ़ आदि का हथियार बनाकर स्वतः संहार करती है।

(ङ) वैज्ञानिकों ने महामारी के कारण की खोजकर उनकी दवाएँ और टीका बना लिया है। इसके अलावा बाढ़, भूकंप आदि

के लिए ऐसे उपाए सुझाए हैं जिससे जान-माल का कम-से-कम नुकसान हो। इस तरह आपदाओं पर काफी हद तक नियंत्रण किया जा चुका है।

(च) उपयुक्त शीर्षक है– "बढ़ती जनसंख्या : एक विकट समस्या"।

40. (क) संविधान विशेषज्ञों ने किसी मंत्री में इन गुणों की अपेक्षा की है– ईमानदारी, भ्रष्टाचार से दूरी तथा उसकी ईमानदारी पर पूरा विश्वास बना होना।

(ख) लोगों को यह विश्वास होना चाहिए कि हमारा यह मंत्री इतना ईमानदार है कि उसे किसी तरह से अर्थात धन, उच्च पद या अन्य तरह के राजनीतिक लाभ वाले पद का लोभ दिखाकर भी भ्रष्ट नहीं बनाया जा सकता है।

(ग) हमारे लोकतंत्र की मूल समस्या है– नैतिकता की कमी। नैतिकता का यह अभाव संविधान, शासन प्रणाली, राजनीतिक दल, निर्वाचन प्रक्रिया आदि में देखी जा सकती है।

(घ) जब तक लोगों में नैतिकता का अभाव रहेगा और उनका आचार–विचार ठीक नहीं रहेगा, तब तक अच्छा संविधान और अच्छी राजनीतिक प्रणाली होने पर भी लोकतंत्र काम नहीं कर सकता है।

(ङ) लोकतंत्र के लिए सबसे पहले हमें स्वयं को ही जागृत करना होगा।

(च) गद्यांश का शीर्षक है– "लोकतंत्र की राह में समस्याएँ"।

41. (क) गांधी जी हलुआ बनाने और आलू पीसने की सीख उन बड़े वकीलों को देना चाहते थे, जिन्हें चंपारण तथा देश के अन्य स्थानों के गरीबों की अगुआई का काम सौंपा जाना था।

(ख) गांधी जी अपने आध्यात्मिक प्रयोगों के माध्यम से देश की गरीब जनता की सेवा करने, उनकी तकदीर सवाँरने, देश को आज़ाद कराने के लिए समर्पित व्यक्तियों के समूह को तैयार करना चाह रहे थे, इसलिए वे आध्यात्मिक प्रयोग कर रहे थे।

(ग) गांधी जी शारीरिक श्रम को इतना महत्व इसलिए देते थे, क्योंकि वे पसीने की कमाई को अच्छी कमाई मानते थे। इसके अलावा वे शारीरिक श्रम को सम्मान एवं प्रतिष्ठा देते थे।

(घ) व्यवसाय के संबंध में गांधी जी का विचार यह था कि कोई काम बड़ा नहीं होता या कोई काम छोटा नहीं होता, जरूरी है कि हर काम को परिश्रम और ईमानदारी से किया जाए।

(ङ) एक प्रतिष्ठित वकील और हज्जाम, दोनों ही अपने काम के लिए समर्पित होकर मेहनत करते हैं, इसलिए उनमें कोई काम छोटा या बड़ा नहीं है।

(च) गद्यांश का शीर्षक है– "शारीरिक श्रम के प्रति गांधी जी के विचार"।

42. (क) लेखक सड़क मार्ग से चलते हुए कुशीनगर जिले में प्रवेश किया। उसका पहला पड़ाव कुशीनगर में था, पर वह कुछ देर तक मगहर में रुका।

(ख) हिंदू–मुस्लिम संप्रदाय में बँटे लोगों ने सांप्रदायिकता का जहर फैलाया, जिससे दोनों संप्रदाय के अनुयायियों में प्रेम और सौहार्द समाप्त हो गया। इस तरह लोगों ने कबीर की मेहनत पर पानी फेर दिया।

(ग) कॉलेज की लड़कियों से की गई बातचीत में यह बात सामने आई कि समाज में अब कुछ बदलाव आ रहा है। अब लड़कियों की पढ़ाई के साथ–साथ उनकी नौकरी पर ध्यान दिया जाने लगा है, मगर सामाजिकता धीरे–धीरे गायब होती जा रही है।

(घ) पंडारी गाँव के युवा काफी जागरूक हैं। वे अपने प्रयास से गाँव में स्कूल चलाते हैं ताकि आने वाली पीढ़ी पढ़–लिखकर आगे बढ़ सके। इस तरह वे शिक्षा का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

(ङ) नई पीढ़ी तीज–त्योहार, गीत–गवनई की अनुपम विरासत से विरत थी।

(च) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है– "कुशीनगर की यात्रा" *अथवा* "समाज में आते बदलाव"।

43. (क) भारतीय किसान अपनी गँवई भाषा में कोई भाषा अत्यंत चाव से सीखता है। इसी भाषा में वह और दूसरे ग्रामीण आपस में बातचीत करते हैं। इसी भाषा का प्रयोग वह बचपन से करता आया है।

(ख) भारतीय किसान अपना घर तालाब की मिट्टी से बनी कच्ची ईंटों से बनाता है। वह अपने घर पर बाँस और बल्लियों के ठाठ पर जंगली घास की छप्पर डाल लेता है।

(ग) भारतीय किसान की दो विशेषताएँ–

(i) भारतीय किसान शरीर से सुदृढ़ और मन से क्षमाशील होता है।

(ii) वह परिश्रम और संतोष में सबसे ऊपर है।

(घ) भारतीय किसानों और गाँव में रहने वालों को पुराणपंथी या बुद्धू नहीं कहना चाहिए।

(ङ) भारतीय किसान के जीवन की कुंजी आत्मनिर्भरता है।

(च) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है– "भारतीय किसान"।

44. (क) गद्यांश के अनुसार आज के समय में यह अधिक आवश्यक है कि हम अपनी वाणी की एकलयता और शांति के माध्यम से अपना सब कुछ गँवाने से बचा लें।

(ख) हमारी जिंदगी में मोबाइल फ़ोन, लैपटॉप या आइपैड जैसे आधुनिक गैजेट्स के शामिल होने से अनौपचारिक बातचीत बंद हो गई है। अब हमलोग परिवार के सदस्यों के बीच रहते हुए भी अपना खाली समय इन आधुनिक उपकरणों के सहारे बिताने लगे हैं।

(ग) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अकसर 'मौन व्रत' रखते थे। उसके अलावा 'ओशो' भी मौन को महत्व देते थे।

(घ) आजकल लोग दूसरों के साथ इसलिए कम बातचीत करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि ईयरफ़ोन में गाने सुनकर या चैटिंग करने से उन्हें आराम मिल जाएगा।

(ङ) सैमुअल जॉनसन का मानना था कि जो ज़िंदगी की छोटी-छोटी परेशानियों और तनाव में आकर खुद को उलझा लेते हैं, वे अपनी ज़िंदगी को बिना पतवार की नाव बना लेते हैं।

(च) गद्यांश का शीर्षक है– "मौन-व्रत की बढ़ती आवश्यकता"।

45. (क) सोशल नेटवर्किंग साइट्स की उपयोगिता यह है कि ये साइट्स लोगों को परस्पर जुड़ने, अपने विचार एवं भावनाओं का आदान-प्रदान करने तथा सामाजिक अंत:क्रिया बढ़ाने का अनोखा मंच प्रदान करती हैं।

(ख) सोशल नेटवर्किंग साइट्स एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म या साइट है जो सामाजिक संबंधों को मजबूत करने तथा अपने विचारों एवं भावनाओं को दूसरों तक पहुँचाती है, इसलिए इन साइट्स पर नियंत्रण नहीं होना चाहिंए।

(ग) सोशल नेटवर्किंग साइट्स का दुरुपयोग करते हुए कुछ लोग उस पर अपमानजनक टिप्पणियाँ करते हैं या आपत्तिजनक तस्वीरें अपलोड करके माहौल को अस्वस्थ बना देते हैं, इस तरह इनका दुरुपयोग हो रहा है।

(घ) सोशल नेटवर्किंग साइट्स के दुरुपयोग को रोकने के लिए इन साइट्स पर आपत्तिजनक सामग्री डालने वालों के विरुद्ध सरकार एवं प्रशासन को बड़ी कार्यवाही करनी चाहिए, ताकि लोग ऐसा करने से पूर्व सोचें।

(ङ) सोशल नेटवर्किंग साइट्स व्यक्तिगत होती हैं जिनमें प्रयोगकर्ता अपने व्यक्तिगत विचारों, गतिविधियों, घटनाओं या व्यक्तिगत रुचियों को किसी अन्य सदस्य के साथ बाँट सकता है। इस तरह सोशल नेटवर्किंग साइट्स अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में सहायक सिद्ध होती हैं।

(च) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है– "सोशल नेटवर्किंग साइट्स की आवश्यकता"।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

46. (क) i (ख) iv (ग) iii (घ) iii (ङ) ii

47. (क) ii (ख) i (ग) iii (घ) i (ङ) iii

48. (क) iii (ख) iv (ग) iii (घ) iv (ङ) iii

खंड-ख : व्यावहारिक व्याकरण

1. शब्द-निर्माण : उपसर्ग-प्रत्यय-समास

1. उपसर्ग

1. शब्द-निर्माण की प्रक्रिया निम्नलिखित तीन प्रकार से होती है–

(क) उपसर्ग द्वारा; जैसे–आ + गमन = आगमन, प्रति + दिन = प्रतिदिन

(ख) प्रत्यय द्वारा; जैसे–मानव + ता = मानवता, फल + दार = फलदार

(ग) समास द्वारा; जैसे–रसोई के लिए घर = रसोई
–प्रधान है जो आचार्य = प्रधानाचार्य

2. 'उपसर्ग' वे लघुतम सार्थक खंड हैं; जो मूलशब्दों के शुरू में लगकर नए शब्द बनाते हैं और मूलशब्द के अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं; जैसे–अ + ज्ञान = अज्ञान, स्व + देश = स्वदेश, वि + चार = विचार, दुर् + भाग्य = दुर्भाग्य।

3. हिंदी में प्रयोग किए जाने वाले उपसर्ग प्रायः निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं–

(क) तत्सम उपसर्ग – अनु + शासन = अनुशासन, अति + रिक्त = अतिरिक्त, अ + ज्ञान = अज्ञान।

(ख) तद्भव उपसर्ग – स + पूत = सपूत, दु + बला = दुबला, चौ + पाई = चौपाई।

(ग) आगत विदेशी उपसर्ग – ब + खूबी = बखूबी, बद + बू = बदबू, कम + ज़ोर = कमज़ोर।

4. (क) अंतर्मुखी – अंतर् + मुखी
(ख) दुर्दशा – दुर् + दशा
(ग) संशोधन – सम् + शोधन
(घ) अत्युत्तम – अति + उत्तम
(ङ) पर्यावरण – परि + आवरण
(च) प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
(छ) सद्भावना – सत् + भावना
(ज) प्राक्कथन – प्राक् + कथन
(झ) बहिष्कार – बहिः + कार
(ञ) सुसंगठित – सु, सम् + गठित
(ट) अत्याचार – अति + आचार
(ठ) व्याकरण – वि, आ + करण
(ड) समालोचना – सम् + आलोचना
(ढ) अध्यक्ष – अधि + अक्ष
(ण) निष्काम – निस् + काम
(त) अनिच्छा – अन् + इच्छा
(थ) सम्मान – सम् + मान
(द) दुस्साहस – दुस् + साहस
(ध) पुनर्निर्माण – पुनर् + निर्माण
(न) अनादि – अन् + आदि
(प) बहिष्कार – बहिर् + कार
(फ) निस्संदेह – निस् + संदेह
(ब) उन्नति – उत् + नति
(भ) दुर्भाग्य – दुर् + भाग्य

5. (क) अनु – अनुभव, अनुकूल।
(ख) अप – अपयश, अपशब्द।
(ग) अव – अवरोध, अवगुण।
(घ) उप – उपयोग, उपक्रम।
(ङ) परा – पराभव, पराजय।
(च) सत् – सज्जन, सत्संग।
(छ) वि – विहार, विचार।
(ज) स्व – स्वदेश, स्वाधीन।
(झ) नि – नियम, निवारण।
(ञ) बे – बेपरदा, बेपरवाह।
(ट) सह – सहयोग, सहमत।
(ठ) प्रति – प्रतिकूल, प्रतिशत।
(ड) अति – अतिरिक्त, अतिशय।
(ढ) आ – आचरण, आजीवन।

6. सम् + वेदना – संवेदना
अन् + अंत – अनंत
प्र + चार – प्रचार
कु + चाल – कुचाल
वि + देश – विदेश
दुस् + कर्म – दुष्कर्म
अ + धर्म – अधर्म
कु + रूप – कुरूप
उन् + तीस – उन्तीस
अ + हिंसा – अहिंसा
परा + जय – पराजय
कम + अक्ल – कमअक्ल
आ + कुल – आकुल
ला + इलाज – लाइलाज
गैर + ज़रूरी – गैरज़रूरी

7.

	शब्द	उपसर्ग		शब्द	उपसर्ग
(क)	निवृत्त	नि	(ख)	विशुद्ध	वि
(ग)	विभाग	वि	(घ)	कुपुत्र	कु
(ङ)	प्रहार	प्र	(च)	अनुज	अनु
(छ)	संपूर्ण	सम्	(ज)	परतंत्र	पर
(झ)	औजार	औ			

8. (क)

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
बदनीयत –	बद	नीयत

(ख) मूलशब्द– चार, उपसर्ग–अति, आ

(ग) खुशबू, खुशदिल।

(घ)

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
दुस्साहस –	दुस्	साहस

(ङ) अधिकार अधिगम अधिकृत

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) i (ख) ii (ग) ii (घ) ii (ङ) ii

(च) ii (छ) ii

2. प्रत्यय

1. वे शब्दांश, जो शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं तथा उनके अर्थ में विशेषता या बदलाव ला देते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं; जैसे– शेर + नी = शेरनी, रंग + ईन = रंगीन, नारी + त्व = नारीत्व, दीन + ता = दीनता।

2. **उपसर्ग और प्रत्यय में निम्नलिखित समानता है–**

उपसर्ग और प्रत्यय में यह समानता है कि दोनों ही शब्दांश हैं, जिनका प्रयोग नए शब्दों की रचना के लिए किया जाता है।

उपसर्ग और प्रत्यय में निम्नलिखित अंतर है–

उपसर्ग और प्रत्यय में मुख्य अंतर यह है कि उपसर्ग का प्रयोग शब्दों के आरंभ में किया जाता है; जैसे– प्र + हार = प्रहार, प्रति + शत = प्रतिशत आदि। जबकि प्रत्यय का प्रयोग शब्द के अंत में किया जाता है; जैसे– बच्चा + पन = बचपन, बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा आदि।

3. तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा अव्यय शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं; जैसे–संज्ञा शब्दों के अंत में–बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा; सर्वनाम शब्दों के अंत में–अपना + पन = अपनापन, विशेषण शब्दों के अंत में–मीठा + आस = मिठास; अव्यय शब्दों के अंत में–बाहर + ई = बाहरी। जबकि कृत् प्रत्यय क्रिया के धातु रूप में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं; जैसे–बिक + ऊ = बिकाऊ; खेल + आड़ी = खिलाड़ी आदि।

4.

	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
(क)	सामाजिकता	समाज	इक, ता
(ख)	दर्शनीय	दर्शन	ईय
(ग)	चमकीला	चमक	ईला
(घ)	ललाइन	लाला	आइन
(ङ)	बुद्धिमानी	बुद्धि	मान, ई

(च)	लिखावट	लिख	आवट
(छ)	गोपनीय	गोपन	ईय
(ज)	लालिमा	लाल	इमा
(झ)	ईमानदारी	ईमान	दार, ई
(ञ)	पियक्कड़	पी	अक्कड़
(ट)	राष्ट्रीयता	राष्ट्र	ईय, ता
(ठ)	बचपन	बच्चा	पन
(ड)	अक्लमंदी	अक्ल	मंद, ई
(ढ)	भौतिकता	भूत	इक, ता
(ण)	औद्योगिक	उद्योग	इक
(त)	दुस्साहसी	दुस्साहस	ई
(थ)	ससुराल	ससुर	आल
(द)	नैतिकता	नीति	इक, ता
(ध)	लुटेरा	लूट	एरा
(न)	तैराकी	तैराक	ई

5.

बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय	ए	इयाँ
करणवाचक कृत् प्रत्यय	आ	अन
स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय	आनी	आइन
भाववाचक कृत् प्रत्यय	आवट	आवा
कर्तृवाचक् कृत् प्रत्यय	अक्कड़	इयल
कर्मवाचक कृत् प्रत्यय	नी	औना
कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय	कार	हारा
भाववाचक तद्धित प्रत्यय	ता	त्व
क्रियावाचक कृत् प्रत्यय	या	कर
स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय	इया	ई
गुणवाचक तद्धित प्रत्यय	इक	ईला
लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय	ई	इया
संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय	आल	एरा

6.

	शब्द		**प्रत्यय**		**नया शब्द**
(क)	प्रार्थना	+	ईय	=	प्रार्थनीय
(ख)	चोर	+	नी	=	चोरनी
(ग)	चिकना	+	आई	=	चिकनाई
(घ)	दर्द	+	नाक	=	दर्दनाक
(ङ)	बड़बड़	+	आहट	=	बड़बड़ाहट
(च)	पत्र	+	आ	=	पत्रा
(छ)	माली	+	इन	=	मालिन
(ज)	चुन	+	आव	=	चुनाव

(झ) ससुर + आल = ससुराल
(ञ) उड़ + आन = उड़ान
(ट) गरम + आहट = गरमाहट
(ठ) चाल + अक = चालक
(ड) लोहा + आर = लुहार
(ढ) झगड़ा + आलू = झगड़ालू
(ण) राधा + एय = राधेय
(त) धन + ई = धनी

7.	**प्रत्यय**	**शब्द**	**शब्द**
(क)	आ	रूपा	झूला
(ख)	इया	बिटिया	खटिया
(ग)	आवट	लिखावट	मिलावट
(घ)	इत	लिखित	पठित
(ङ)	आहट	चिल्लाहट	मुसकराहट
(च)	इयत	हैवानियत	इनसानियत
(छ)	ईला	रंगीला	चमकीला
(ज)	नाक	दर्दनाक	शर्मनाक
(झ)	आक	तैराक	चालाक
(ञ)	कार	चित्रकार	पत्रकार
(ट)	अंत	दिगंत	महंत
(ठ)	आका	लड़ाका	उड़ाका
(ड)	नी	शेरनी	चोरनी
(ढ)	इयाँ	दवाइयाँ	मछलियाँ

8.	**शब्द**	**उपसर्ग**	**प्रत्यय**
(क)	विफलता	वि	ता
(ख)	स्वाभिमानी	स्व, अभि	ई
(ग)	अनावश्यक	अन्	×
(घ)	बखूबी	ब	ई
(ङ)	स्वाधीनता	स्व	ता
(च)	पुनर्जीवित	पुनर्	इत
(छ)	उपयोगी	उप	ई
(ज)	बेचैनी	बे	ई

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) i (ख) i (ग) iii (घ) ii

3. समास

1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों से मिलाकर उनका संक्षेपीकरण करके नए स्वतंत्र शब्द बनाने की प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं; जैसे–गंगा का जल = गंगा जल; पंक में जन्म लेता है जो = पंकज; तीन फलों का समाहार = त्रिफला।
2. समास का अर्थ है– संक्षित करना या संक्षेपीकरण।
3. समास के निम्नलिखित छह भेद हैं–

   (क) अव्ययीभाव समास (ख) कर्मधारय समास (ग) तत्पुरुष समास

   (घ) द्विगु समास (ङ) द्वंद्व समास (च) बहुव्रीहि समास
4. तत्पुरुष समास में उत्तर पद प्रधान होता है।
5. सामान्य अर्थ छोड़कर विशिष्ट अर्थ प्रदान करने वाला समास 'बहुव्रीहि समास' होता है।
6. द्वंद्व समास में पूर्व पद एवं उत्तर पद दोनों ही प्रधान होते हैं।
7. दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को 'संधि' कहते हैं; जैसे–सूर्य + उदय = सूर्योदय (अ + उ = ओ), विद्या + आलय = विद्यालय (आ + आ = आ)

   जबकि दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षित करके नया शब्द बनाने की प्रक्रिया को 'समास' कहा जाता है; जैसे–पुरुषों में जो है उत्तम – पुरुषोत्तम, पीत है जो अंबर – पीतांबर, पीत (पीला) है वस्त्र जिसका अर्थात श्रीकृष्ण – पीतांबर, चक्र है पाणि में जिसके अर्थात विष्णु – चक्रपाणि।

8.	**समस्त पद**	**विग्रह**	**समास**
(क)	पुस्तकालय	पुस्तकों का आलय (घर)	संबंध तत्पुरुष समास
(ख)	पंचवटी	पाँच वृक्षों का समूह	द्विगु समास
(ग)	राजकुमारी	राज्य की कुमारी	संबंध तत्पुरुष समास
(घ)	कृष्णसर्प	कृष्ण (काला) है जो सर्प	कर्मधारय समास
(ङ)	युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि	संप्रदान तत्पुरुष समास
(च)	दुश्चरित्र	दुस् (बुरा) है चरित्र	कर्मधारय समास
(छ)	विद्यालय	विद्या का आलय	संबंध तत्पुरुष समास
(ज)	चतुर्भुज	चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात विष्णु	बहुव्रीहि समास
(झ)	राहखर्च	राह के लिए खर्च	संप्रदान तत्पुरुष समास
(ञ)	भुखमरा	भूख से मरा हुआ	करण तत्पुरुष समास
(ट)	परलोकगमन	परलोक को गमन	कर्म तत्पुरुष समास
(ठ)	प्रतिदिन	प्रत्येक (हर) दिन	अव्ययीभाव समास
(ड)	वचनामृत	वचन रूपी अमृत	कर्मधारय समास
(ढ)	षडानन	षट् (छह) आनन (मुँह) हैं जिसके अर्थात गणेश	बहुव्रीहि समास
(ण)	धर्माधर्म	धर्म या अधर्म	द्वंद्व समास
(त)	नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव जी	बहुव्रीहि समास
(थ)	लोकप्रिय	लोक में प्रिय	अधिकरण तत्पुरुष समास
(द)	प्रधानमंत्री	प्रधान है जो मंत्री	कर्मधारय समास
(ध)	हिमालय	हिम का आलय (घर)	संबंध तत्पुरुष समास

(न)	गजानन	गज के समान है आनन है जिसका अर्थात गणेश	बहुव्रीहि समास
(प)	राजदूत	राज्य या राज का दूत	संबंध तत्पुरुष समास
(फ)	लंबोदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश	बहुव्रीहि समास
(ब)	सतसई	सात सौ दोहों का समूह	द्विगु समास
(भ)	घनश्याम	घन के समान श्याम	कर्मधारय समास
(म)	त्रिवेणी	तीन वेणी (धाराओं) का समूह	द्विगु समास

9.	**समस्त पद**	**विग्रह**	**समास**
(क)	मुरलीधर	मुरली को धारण करता है जो अर्थात श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि समास
(ख)	आजीवन	जीवन भर	अव्ययीभाव समास
(ग)	विद्याधन	विद्या रूपी धन	कर्मधारय समास
(घ)	रातोंरात	रात ही रात में	अव्ययीभाव समास
(ङ)	दोपहर	दो पहरों का समूह	द्विगु समास
(च)	परमानंद	परम (श्रेष्ठ) है आनंद	कर्मधारय समास
(छ)	देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	संप्रदान तत्पुरुष समास
(ज)	चरणकमल	चरण रूपी कमल	कर्मधारय समास
(झ)	पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समूह	द्विगु समास
(ञ)	पुरुषोत्तम	पुरुषों में जो है उत्तम अर्थात श्रीराम	बहुव्रीहि समास
(ट)	पीतांबर	पीत (पीला) है अंबर	कर्मधारय समास
(ठ)	चराचर	चर या अचर	अव्ययीभाव समास
(ड)	कर्महीन	कर्म से हीन	अपादान तत्पुरुष समास
(ढ)	महावीर	महान है जो वीर अर्थात हनुमान	बहुव्रीहि समास
(ण)	कमलनयन	कमल रूपी नयन	कर्मधारय समास

10.	**विग्रह**	**समस्तपद**	**समास**
(क)	सिंह रूपी नर	नरसिंह	कर्मधारय समास
(ख)	दिन ही दिन में	दिनोंदिन	अव्ययीभाव समास
(ग)	लंबी भुजाएँ हैं जिसकी	आजानुबाहु	कर्मधारय समास
(घ)	परम है जो आनंद	परमानंद	कर्मधारय समास
(ङ)	हानि या लाभ	हानि-लाभ	द्वंद्व समास
(च)	तीन फलों का समाहार	त्रिफला	द्विगु समास
(छ)	आधा है जो पका	अधपका	कर्मधारय समास
(ज)	पाँच तंत्रों का समाहार	पंचतंत्र	द्विगु समास
(झ)	कमल के समान नयन	कमलनयन	कर्मधारय समास
(ञ)	क्रोध रूपी अग्नि	क्रोधाग्नि	कर्मधारय समास
(ट)	चार हैं मुख जिसके	चतुरानन	बहुव्रीहि समास

(ठ)	जल की धारा	जलधारा	संबंध तत्पुरुष समास
(ड)	अपना और पराया	अपना-पराया	द्‌वंद्‌व समास
(ढ)	लक्ष्य से भ्रष्ट	लक्ष्यभ्रष्ट	अपादान तत्पुरुष समास
(ण)	यश को प्राप्त	यशप्राप्त	कर्म तत्पुरुष समास
(त)	तीन भुवनों का समाहार	त्रिभुवन	द्‌विगु समास
(थ)	मृग जैसे नयनों वाली	मृगनयनी	कर्मधारय समास
(द)	गुरु के लिए दक्षिणा	गुरुदक्षिणा	संप्रदान तत्पुरुष समास
(ध)	बात ही बात में	बातोंबात	अव्ययीभाव समास
(न)	गृह में प्रवेश	गृहप्रवेश	अधिकरण तत्पुरुष समास

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) i (ख) ii (ग) ii (घ) ii (ङ) iii

2. अर्थ की दृष्टि से वाक्य-भेद

1. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं। इनका परिचय एवं उदाहरण इस प्रकार है–

(क) **विधानवाचक वाक्य :** ऐसे वाक्य जिसमें किसी क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती हो, उन्हें 'विधानवाचक वाक्य' कहते हैं। विधानवाचक वाक्य को 'विधिवाचक वाक्य' भी कहा जाता है; जैसे–किसान हल चलाता है।

(ख) **निषेधवाचक वाक्य :** ऐसे वाक्य जिनमें किसी कार्य के न होने या न करने का बोध हो, उन्हें 'निषेधवाचक वाक्य' कहते हैं; जैसे–आज हमारे अध्यापक नहीं आए।

(ग) **प्रश्नवाचक वाक्य :** ऐसे वाक्य जिनमें प्रश्न किया जाए तथा उत्तर पाने की अपेक्षा हो, उन्हें 'प्रश्नवाचक वाक्य' कहते हैं; जैसे–तुम कल खेलने क्यों नहीं आए थे?

(घ) **विस्मयादिवाचक वाक्य :** ऐसे वाक्य जिनमें विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, शोक, घृणा आदि का भाव व्यक्त हो, उन्हें 'विस्मयादिवाचक वाक्य' कहते हैं; जैसे–अरे! इतना बड़ा साँप। (विस्मय); वाह! उसने सुंदर शॉट लगाया। (हर्ष)

(ङ) **आज्ञावाचक वाक्य :** ऐसे वाक्य जिनमें आज्ञा, आदेश, प्रार्थना या उपदेश आदि का बोध हो, उन्हें 'आज्ञावाचक वाक्य' कहते हैं; जैसे–तुम बाज़ार चले जाओ।

(च) **इच्छावाचक वाक्य :** ऐसे वाक्य जिनमें इच्छा, आशा, आशीर्वाद, शाप या शुभकामना का बोध हो, उन्हें 'इच्छावाचक वाक्य' कहते हैं; जैसे–आपका भविष्य उज्ज्वल हो।

(छ) **संदेहवाचक वाक्य :** ऐसे वाक्य, जिनमें किसी कार्य के होने में संदेह हो या संभावना हो, उन्हें 'संदेहवाचक वाक्य' कहते हैं; जैसे–हो सकता है, आज वह विद्यालय गया हो।

(ज) **संकेतवाचक वाक्य :** ऐसे वाक्य, जिनमें एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें 'संकेतवाचक वाक्य' कहते हैं; जैसे–अगर तुम जाते, तो मैं भी साथ चलता।

2. वाक्य-भेद मुख्य रूप से दो आधारों पर किया जाता है–

(क) अर्थ के आधार पर– इस आधार पर वाक्यों के आठ भेद होते हैं।

(ख) रचना या बनावट के आधार पर– इस आधार पर वाक्यों के तीन भेद होते हैं।

3. (क) संदेहवाचक वाक्य

(ख) इच्छावाचक वाक्य

(ग) इच्छावाचक वाक्य

(घ) प्रश्नवाचक वाक्य

(ङ) संकेतवाचक वाक्य

(च) विधानवाचक वाक्य

(छ) आज्ञावाचक वाक्य

(ज) आज्ञावाचक वाक्य

(झ) प्रश्नवाचक वाक्य

(ञ) संदेहवाचक वाक्य

(ट) निषेधवाचक वाक्य
(ठ) संकेतवाचक वाक्य
(ड) विस्मयादिवाचक वाक्य
(ढ) निषेधवाचक वाक्य
(ण) विधानवाचक वाक्य
(त) आज्ञावाचक वाक्य

4. (क) इस समय वर्षा हो रही है। – इस समय वर्षा नहीं हो रही है।
(ख) यहाँ नवंबर में सरदी पड़ती है। – क्या यहाँ नवंबर में सरदी पड़ती है?
(ग) संचिता कक्षा में प्रथम आई है। – अरे! संचिता कक्षा में प्रथम आई है।
(घ) अरे! यहाँ आज बर्फ़ पड़ी है। – यहाँ आज बर्फ़ पड़ी है।
(ङ) रोहन अपनी लिखावट सुधारता है। – रोहन अपनी लिखावट सुधारो।
(च) महँगाई कम हो जाएगी। – शायद अब महँगाई कम हो जाएगी।
(छ) अब कोविड-19 के मरीज कम हो रहे हैं। – काश! कोविड-19 के मरीज कम हो जाएँ।
(ज) मरीज स्वस्थ हो गया होगा। – यदि मरीज समय से दवाएँ खाता तो वह स्वस्थ होता।

5. (क) उसके व्यवहार को सब जानते हैं।
(ख) क्या उसने अपना काम पूरा कर लिया है?
(ग) यदि आज शाम चाँद दिखाई देता तो कल विद्यालय में छुट्टी होती।
(घ) अरे! हाथी कितना बड़ा है।
(ङ) शायद कल मैं विद्यालय नहीं जाऊँगा।
(च) अरे! वह कक्षा में प्रथम आया है।
(छ) उसने किसी से बात की।
(ज) अर्चना अपना पाठ याद करो।
(झ) आज ज्यादा ठंड नहीं है।
(ञ) वह नहीं मानेगा।
(ट) अरे! तुम आ गए हो।
(ठ) क्या आज मामा जी आएँगे?
(ड) वीरेश, प्रतिदिन व्यायाम करो।
(ढ) क्या तुम्हारा मित्र आज विद्यालय नहीं जाएगा?
(ण) मैं चहाता हूँ कि तुम प्रधानाचार्य जी से बात करो।
(त) संभवत: वर्षा आ जाए।
(थ) मैं चाहता हूँ कि कक्षा में सभी विद्यार्थी शांत बैठें।
(द) क्या वह दिल्ली जाएगा?
(ध) अपनी-अपनी आस्थानुसार नित्य प्रार्थना करो।
(न) उसने हर उपाय कर लिया।

(प) वह इतना मूर्ख नहीं है।

(फ) संभवत: गौरव ने दीनू की सहायता नहीं की।

(ब) क्या अपको मेरा पत्र मिल गया?

(भ) यह एक अच्छा छात्र नहीं है।

(म) संभवत: आज राम चलचित्र देखे।

(य) लड़को! घर में आराम करो।

(र) शीला, रोज़ पढ़ने जाओ।

(ल) अरे! तुम्हारी साड़ी तो बहुत सुंदर है।

(व) राम और श्याम साथ-साथ रहते हैं।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) iii (ख) i (ग) ii (घ) iii (ङ) i (च) (छ) i

3. अलंकार

1. (क) यमक अलंकार, अनुप्रास अलंकार

(ख) श्लेष अलंकार, अनुप्रास अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) रूपक अलंकार, पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

(ङ) रूपक अलंकार

(च) उपमा अलंकार, अनुप्रास अलंकार

(छ) उपमा अलंकार

(ज) अनुप्रास अलंकार

(झ) रूपक अलंकार

(ञ) रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार

(ट) अनुप्रास अलंकार

(ठ) रूपक अलंकार

(ड) अनुप्रास अलंकार

(ढ) यमक अलंकार

(ण) उपमा अलंकार

(त) (i) उपमा अलंकार (ii) अनुप्रास अलंकार

(थ) रूपक अलंकार

(द) अनुप्रास अलंकार, उत्प्रेक्षा अलंकार

(ध) रूपक अलंकार

(न) उत्प्रेक्षा अलंकार

(प) उत्प्रेक्षा अलंकार

(फ) अनुप्रास अलंकार

(ब) अनुप्रास अलंकार

(भ) उत्प्रेक्षा अलंकार

(म) उपमा अलंकार

2. (क) अनुप्रास अलंकार, रूपक अलंकार

(ख) उपमा अलंकार

(ग) यमक अलंकार

(घ) अनुप्रास अलंकार

(ङ) अनुप्रास अलंकार

(च) अनुप्रास अलंकार

(छ) पुनरुक्तिप्रकाश एवं अनुप्रास अलंकार

(ज) अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश एवं उपमा अलंकार

(झ) उपमा अलंकार

(ञ) अनुप्रास अलंकार

(ट) रूपक अलंकार, अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

(ठ) रूपक अलंकार

(ड) रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार

(ढ) रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार

(ण) अनुप्रास अलंकार

3. (क) हैं किनारे कई पत्थर पी रहे चुपचाप पानी।

(ख) मुदित महीपति मंदिर आए।

(ग) उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग।
विहँसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।।

(घ) रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

(ङ) पीपर पात सरिस मन डोला।

(च) देखन नगर भूप सुत आए। समाचार पुरवासिन्ह पाए।
धाय काम-धाम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।

(छ) पानी परात को हाथ छुयो नहिं,
नैनन के जल से पग धोए।

(ज) तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती हैं।

बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) iv (ख) i (ग) ii (घ) i (ङ) ii

(च) i (छ) i (ज) i

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–1

1. (क) (i) परा (ii) सम्मान

(ख) (i) पन (ii) समझदारी

(ग) (i) कर्मधारय समास में पूर्व पद कोई भी विशेषण होता है वहीं द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण होता है।

(ii) तत्पुरुष समास

(iii) चौराहा – द्विगु समास

2. (क) (i) विधानवाचक वाक्य (ii) निषेधवाचक वाक्य

(ख) (i) वाह! तुम्हारा पुत्र बहुत सुंदर है। (ii) मैं फ़िल्म देखता हूँ।

3. (क) रामनाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।

(ख) नभ पर चमचम चपला चमकी।

(ग) (i) रूपक अलंकार (ii) उपमा अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–2

1. (क) (i) उप (ii) निर्धन

(ख) (i) इन (ii) लिखावट

(ग) (i) तत्पुरुष समास में उत्तर पद (दूसरा पद) प्रधान होता है और पूर्व पद गौण होता है, जबकि कर्मधारय समास में उत्तर पद (दूसरा पद) विशेष्य और पूर्व पद विशेषण होता है।

(ii) आज और कल, द्वंद्व समास

(iii) असफल, नञ् तत्पुरुष समास

2. (क) (i) आज्ञासूचक वाक्य (ii) आज्ञावाचक वाक्य

(ख) (i) भगवान करे तुम पास हो जाओ। (ii) क्या आज बारिश होगी?

3. (क) जो रहीम गति दीप की कूल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो करै, बढ़ै अँधेरो होय।।

(ख) हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निशाचर भाग।।

(ग) (i) मानवीकरण अलंकार (ii) अनुप्रास अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–3

1. (क) (i) कु (ii) निस्तेज

(ख) (i) ई (ii) सम्मानित

(ग) (i) बहुव्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। जब दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हैं, तब वह तीसरा पद प्रधान होता है परंतु अव्ययीभाव समास में पहला पद (पूर्व पद) अव्यय तथा प्रधान होता है।

(ii) वास के लिए स्थान–संप्रदान तत्पुरुष समास

(iii) ध्याननिद्रा – संबंध तत्पुरुष समास

2. (क) (i) निषेधवाचक वाक्य (ii) संदेहवाचक वाक्य

(ख) (i) क्या आप मेरे घर चलेंगे? (ii) वे लोग देहरादून में नहीं रहते हैं।

3. (क) काली घटा का घमंड घटा। (ख) मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(ग) (i) उपमा अलंकार (ii) मानवीकरण अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–4

1. (क) (i) प्र (ii) अनुमान

(ख) (i) इक (ii) कमजोर

(ग) (i) अव्ययीभाव समास में पहला पद प्रधान होता है जबकि द्‌वंद्‌व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं।

(ii) राजमहल – राजा का महल – संबंध तत्पुरुष समास

(iii) हरमास – तत्पुरुष समास

2. (क) (i) विधानवाचक वाक्य (ii) विस्मयादिवाचक वाक्य

(ख) (i) उसके घर नहीं जाना है। (ii) भगवान करें आपको डॉक्टर मिल जाए।

3. (क) मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के, पाहुन ज्यों आए हों, गाँव में शहर के।

(ख) गुरु कुम्हार सिष कुंभ है गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।

(ग) (i) यमक अलंकार (ii) अनुप्रास अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–5

1. (क) (i) वि (ii) उन्नति

(ख) (i) आवट (ii) सफलता

(ग) (i) द्‌विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है। इसमें समूह या समाहार का ज्ञान होता है जबकि बहुव्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। इसके समस्त पद का विग्रह करने पर वाला, वाली, है, जो, जिसका, जिसके, वह आदि शब्द आते हैं।

(ii) सात दिनों का समाहार – द्‌विगु समास

(iii) प्रसंगानुसार – संबंध तत्पुरुष समास

2. (क) (i) विधानवाचक वाक्य (ii) आज्ञावाचक वाक्य

(ख) (i) क्या नेता जी भाषण देंगे? (ii) शायद माता जी बाज़ार जा रही हैं।

3. (क) अंबर-पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा नागरी।

(ख) उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा, मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।

(ग) (i) अतिशयोक्ति अलंकार (ii) रूपक अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–6

1. (क) (i) स्व (ii) सुपुत्र

(ख) (i) ई (ii) कमाऊ

(ग) (i) अव्ययीभाव समास का पहला पद अव्यय होता है जबकि कर्मधारय समास का पहला पद विशेषण होता है।

(ii) परम है जो आत्मा – कर्मधारय समास

(iii) बाढ़-पीड़ित – करण तत्पुरुष समास

2. (क) (i) आज्ञावाचक वाक्य (ii) विस्मयादिवाचक वाक्य

(ख) (i) अगर मेरे पास रुपये होते तो भी मैं कार नहीं लेता। (ii) पत्र लिखो।

3. (क) चरण कमल बंदौ हरिराई।

(ख) आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार,
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।

(ग) (i) उत्प्रेक्षा अलंकार (ii) अनुप्रास अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–7

1. (क) (i) अव (ii) अत्यधिक

(ख) (i) ई (ii) चतुराई

(ग) (i) द्विगु समास का प्रथम पद संख्यावाचक विशेषण होता है और इसमें समूह या समाहार का ज्ञान होता है परंतु द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने में दोनों पदों के बीच और, या, तथा, अथवा जैसे योजक शब्दों का प्रयोग होता है।

(ii) जो उपन्यासों में सम्राट हो – कर्मधारय समास

(iii) पनचक्की – तत्पुरुष समास

2. (क) (i) संदेहवाचक वाक्य (ii) निषेधवाचक वाक्य

(ख) (i) अमर रोज़ कंप्यूटर सीखने जाओ। (ii) तुम सबको साथ जाना चाहिए।

3. (क) कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए,
हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।

(ख) आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार,
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।

(ग) (i) मानवीकरण अलंकार और अनुप्रास अलंकार (ii) रूपक अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–8

1. (क) (i) बद (ii) अनपढ़

(ख) (i) बाज़ (ii) रसीला

(ग) (i) कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है, परंतु द्वंद्व समास के समस्त पद में दोनों पद प्रधान होते हैं।

(ii) वनों का स्थल – तत्पुरुष समास

(iii) पीतांबर – कर्मधारय समास

2. (क) (i) विधानवाचक वाक्य (ii) निषेधवाचक वाक्य

(ख) (i) अजय कार चलाना नहीं सीख रहा है। (ii) तुम घर जाओ।

3. (क) हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग,
लंका सिगरी जल गई, गए निशाचर भाग।

(ख) मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ।

(ग) (i) उपमा अलंकार (ii) मानवीकरण अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–9

1. (क) (i) प्रति (ii) उनसठ

(ख) (i) आहट (ii) खतरनाक

(ग) (i) कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है, जबकि द्विगु समास के समस्तपद का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है।

(ii) पाठ के लिए शाला – संप्रदान तत्पुरुष समास

(iii) शरणागत – अधिकरण तत्पुरुष समास

2. (क) (i) संदेहवाचक वाक्य (ii) विस्मयादिवाचक वाक्य

(ख) (i) शायद वह पत्र लिख रहा है। (ii) अमन घर जाओ।

3. (क) हरि मुख मानो मधुर मयंक। (ख) रामनाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।

(ग) (i) उत्प्रेक्षा अलंकार (ii) अनुप्रास अलंकार

व्यावहारिक व्याकरण पर आधारित प्रश्न-पत्र–10

1. (क) (i) वि (ii) उपनगर

(ख) (i) ई (ii) मरियल

(ग) (i) अव्ययीभाव समास में पहला पद (पूर्वपद) अव्यय तथा प्रधान होता है तथा तत्पुरुष समास में दूसरा पद (उत्तर पद) प्रधान होता है और पहला पद (पूर्वपद) गौण होता है।

(ii) आत्म (स्वयं) की कथा – संबंध तत्पुरुष समास

(iii) घनश्याम – कर्मधारय समास

2. (क) (i) आज्ञावाचक वाक्य (ii) विधानवाचक वाक्य

(ख) (i) जब अच्छे काम किए जाते हैं तब प्रशंसा मिलती है। (ii) तुम्हारे पिता जी डॉक्टर हैं।

3. (क) तीन बेर खाती थीं, वे तीन बेर खाती हैं।

(ख) अंबर-पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा नागरी।

(ग) (i) रूपक अलंकार (ii) उपमा अलंकार

खंड-ग : लेखन

1. अनुच्छेद-लेखन

1. मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना

जब मैं कक्षा सातवीं में पढ़ता था तो मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। मेरे पिता जी रिक्शा चलाते थे और मेरी माँ कई घरों में चौका-बरतन करती थीं, तब जाकर दो वक्त की रोटी खाने को मिल पाती थी। परंतु मेरी माँ चाहती थीं कि मैं पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनूँ। इसलिए वे मुझे पढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित करती रहती थीं। मेरी कक्षा के लगभग सभी विद्यार्थी गणित और विज्ञान की ट्यूशन पढ़ते थे। ट्यूशन न पढ़ने के कारण मैं पढ़ने में सबसे कमज़ोर था। मैंने यह बात जब अपनी माँ को बताई तो उन्होंने मेरे गणित के अध्यापक से बात की। हमारी परिस्थिति को समझते हुए वे मुझे मुफ़्त में पढ़ाने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था, मैं मन लगाकर पढ़ने लगा और मैं भी अन्य विद्यार्थियों की तरह होशियार हो गया। मेरी परिस्थिति को देखकर विज्ञान के शिक्षक भी मुझे मुफ़्त में ट्यूशन देने लगे। परिणामस्वरूप आठवीं की परीक्षा में मैं अपनी कक्षा में अव्वल आया। गणित में मेरे सभी विद्यार्थियों से अधिक अंक आए। यह देखकर मेरे गणित के अध्यापक ने मेरी पीठ थपथपाकर मुझे शाबाशी दी। उनकी शाबाशी से मेरे हर्ष की सीमा न रही। मैं उनके पैरों में गिर पड़ा। फिर उन्होंने मुझे उठाकर पुनः शाबाशी दी। मुझे उनका प्यार और शाबाशी सदैव स्मरण रहेगी।

2. मेरी प्रिय पुस्तक

महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' मेरी प्रिय पुस्तक है। इस महान पुस्तक में वे सभी गुण विद्यमान हैं, जिनके द्वारा भारतीय नीति, मर्यादा और संस्कृति की रक्षा हो सकती है। यह ऐसा अथाह सागर है, जिसका जितना मंथन किया जाए, उतने ही अधिक बहुमूल्य रत्न प्राप्त हो सकेंगे। मेरी इस प्रिय पुस्तक में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के लोकरक्षक चरित्र का सजीव चित्रांकन है। वे इस महाकाव्य के धीरोदात्त नायक हैं। वे परमब्रह्म होते हुए भी इसमें एक गृहस्थ के रूप में चित्रित किए गए हैं। इसमें जहाँ वे धीर, वीर, गंभीर व्यक्तित्व के रूप में दृष्टिगत होते हैं, वहीं वे आज्ञाकारी पुत्र, आदर्श भ्राता, एक सदाचारी पति, आदर्श सखा और आदर्श राजा के रूप में भी दिखाई पड़ते हैं। इस महाकाव्य के पात्रों के व्यक्तित्व स्वयं में आदर्श हैं, भारतीय संस्कृति के ज्योति पुंज हैं। सती साध्वी सीता, उर्मिला, मंदोदरी और सुलोचना के रूप में पत्नी का आदर्श, भरत और लक्ष्मण के रूप में कनिष्ठ भ्राताओं का आदर्श, पवनसुत हनुमान के रूप में सच्चे भक्त का आदर्श और निषादराज गुह व वानरराज सुग्रीव के रूप में सखा का आदर्श अनुकरणीय है। लोकनायक तुलसीदास ने इन चरित्रों के माध्यम से भारतीय समाज को ऐसे मानवीय रत्न प्रदान किए हैं, जो कालजयी हैं। इस महाकाव्य में भाव पक्ष और कला पक्ष का अत्यंत ही सुंदर समन्वय हुआ है। तुलसीदास जी ने अपनी इस महान कृति में मानवीय हृदय की विभिन्न व परस्पर विरोधी भावनाओं का अत्यंत सजीव चित्रांकन किया है। हर्ष, शोक, द्वेष, करुणा, दुख, चिंता और क्रोध आदि भावों को दर्शाने में तुलसीदास जी सिद्धहस्त थे। 'रामचरितमानस' का कलापक्ष भी बहुत ही प्रभावोत्पादक है। इसकी स्वाभाविक अलंकार योजना और व्यंजना शब्द-शक्ति ने इसे सर्वोत्तम काव्यों की श्रेणी प्रदान की है। वास्तव में, मैं अपनी इस प्रिय पुस्तक की जितनी भी प्रशंसा करूँ, वह कम है।

3. हमारे देश पर पड़ता विदेशी प्रभाव

वर्तमान युग में संपूर्ण विश्व एक विशाल देश की तरह हो गया है। ऐसी स्थिति में विभिन्न देशों का अन्य देशों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। भारत की भाषा, धर्म तथा संस्कृति का प्रभाव अनेक देशों में देखा जा सकता है परंतु भारत पर विदेशी प्रभाव बहुत अधिक मात्रा में लक्षित होता है। भारत के संविधान पर गहरा विदेशी प्रभाव है। यहाँ की शिक्षा प्रणाली भी विदेशों से विशेष रूप से पाश्चात्य देशों से प्रभावित है। भारत में बड़े शहरों तथा कस्बों में विद्यार्थी राष्ट्रभाषा के स्थान पर अंग्रेज़ी भाषा पढ़ना तथा बोलना अधिक पसंद करते हैं। दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई तथा मुंबई में अधिकांश लोग अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ाना पसंद करते हैं। हमारे शहरों और कस्बों में वेशभूषा पर भी विदेशी प्रभाव स्पष्ट

दृष्टिगत होता है। लोग फेसबुक, टविट्र आदि में रुचि लेने लगे हैं। अंग्रेज़ी फ़िल्मों का हमारे देश की फ़िल्मों पर गहरा प्रभाव लक्षित हो रहा है। वस्तुतः बड़े शहरों में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बहुत अधिक दिखाई देता है।

4. महानगरों में आवास की समस्या

भारत एक विशाल आबादी वाला देश है। हमारी जससंख्या निरंतर बढ़ती जा रही है तथा 120 करोड़ के आँकड़े को पार कर चुकी है। हमारा देश विभिन्न राज्यों में बँटा हुआ हुआ है। भारत में मुख्यतः 11 महानगर हैं– मुंबई, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, बैंगलुरू, हैदराबाद, अहमदाबाद, पुणे, सूरत, जयपुर तथा कोच्चि। महानगरों में कई रोज़गार के अनेक साधन तथा जीवनोपयोगी सुविधाएँ सहज उपलब्ध होती हैं। जिसके कारण आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों तथा देश के अन्य आर्थिक रूप से पिछड़े राज्यों से लोग महानगरों की ओर पलायन करते हैं। अपने जीवन को बेहतर बनाने तथा आजीविका की तलाश में किए गए इस पलायन के कारण महानगरों पर अतिरिक्त दबाव पड़ रहा है। इस पलायन का सर्वप्रथम प्रभाव आवासीय सुविधाओं पर पड़ता है। कम आवासीय सुविधाओं और अधिक माँग के कारण मकानों की कीमतें तथा किराए में निरंतर वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप निम्न आय श्रेणी वर्ग को अमानवीय परिस्थितियों में रहना पड़ता है। महानगरों का विस्तार तो निरंतर हो रहा है परंतु ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों से होने वाला पलायन इससे कहीं अधिक गति से हो रहा है। आवास की समस्या को दूर करने हेतु सर्वप्रथम आवश्यक है, तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या पर प्रतिबंध लगाना। लोगों को 'छोटा परिवार, सुखी परिवार' के प्रति जागरूक किया जाए। साथ ही यह प्रयास भी किया जाए कि ग्रामीण क्षेत्रों तथा आर्थिक रूप से पिछड़े राज्यों में भी रोज़गार के अवसर उपलब्ध हों ताकि वहाँ के लोगों को आजीविका की तलाश में महानगरों की ओर पलायन न करना पड़े। शहरों में भी सरकार को कम कीमतों पर गरीबों को आवास उपलब्ध कराने चाहिए। लोगों को भी शिक्षित किया जाए ताकि वे इस समस्या की गंभीरता को समझें।

5. छात्र स्वयं करें।

6. गाँवों का देश : भारत

हमारा देश भारत गाँवों का देश है। हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती है। मैं भी एक गाँव का ही निवासी हूँ। गाँव के प्रति मेरा गहरा लगाव है। मेरा जन्म उत्तराखंड राज्य के उधमसिंह नगर ज़िले के काशीपुर नामक गाँव में हुआ था। मेरे बचपन के पहले पाँच वर्ष यहीं बीते। अब यहाँ के निवासियों में बहुत जागरूकता आ गई है। अब गाँव के लोग उतने भोले-भाले नहीं रह गए हैं, जितने एक दशक पहले तक हुआ करते थे। अब वे अपने गाँव को आदर्श गाँव बनाने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। अब इस गाँव में शिक्षा एवं चिकित्सा की सुविधाएँ उपलब्ध होने लगी हैं। हम सब मिलकर भारत सरकार के 'सर्वशिक्षा अभियान' को सफल बना सकते हैं। अब यहाँ राज्य सरकार ने भी प्राथमिक चिकित्सा केंद्र खोल दिया है। हमें अपने प्रयत्नों से गाँव को साफ़ सुथरा रखना है, ताकि यहाँ बीमारियाँ न फैलने पाएँ। हालाँकि यहाँ परिवहन की समस्या का पूरा हल अभी तक नहीं निकल पाया है। गाँव तक सड़क तो बन गई है, पर बसों की संख्या अभी भी अपर्याप्त है। हम राज्य सरकार पर दबाव डालकर इस समस्या का समाधान ज़रूर कराएँगे, तभी हमारा गाँव सँवर सकेगा। गाँववासियों में पारस्परिक प्रेम बढ़ाने के उपाय करने ज़रूरी हैं। उनमें सामूहिकता की भावना भरनी होगी। तभी सब मिलकर गाँव को आदर्श गाँव बना सकते हैं। हम सभी को अपने गाँव और नगर के विकास में सहयोग करना चाहिए।

7. महँगाई की मार

महँगाई की मार से वर्तमान समय में सभी त्रस्त हैं। गरीब तथा मध्यम वर्ग दोनों पर महँगाई की मार पड़ रही है। आज के इस महँगे दौर में घर का खर्च चलाना कठिन होता जा रहा है। गरीब की थाली से दाल, सब्ज़ियाँ, मक्खन व दूध-दही गायब होता जा रहा है। सरकारें महँगाई कम करने को लेकर दावे तो बहुत करती हैं, पर महँगाई सुरसा के मुँह की तरह बढ़ती ही जा रही है। महँगाई पर अगर विचार करें तो पता चलता है कि व्यापारियों की जमाखोरी, कालाबाज़ारी तथा उत्पादन में कमी इसके प्रमुख कारण हैं। सरकार की गलत नीतियाँ भी इसके लिए काफी हद तक ज़िम्मेदार हैं। इस महँगाई से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। भ्रष्टाचार के बढ़ने के पीछे भी यही कारण है। सीमित आय से घर का खर्च चलाना कठिन होता जा रहा है। जनसंख्या में अंधाधुंध बढ़ोतरी इसका प्रमुख कारण है। जितना उत्पादन होता है, वह बढ़ती जनसंख्या के लिए पर्याप्त नहीं होता। इस बढ़ती महँगाई के कारण हमारी अर्थव्यवस्था चौपट होती जा रही है। सरकार को कुछ कठोर कदम उठाने होंगे, तभी इस बढ़ती महँगाई पर काबू पाया जा सकेगा। अब जनता के सब्र का बाँध टूट रहा है।

8. छात्र स्वयं करें।

9. आतंकवाद : एक चुनौती

आतंकवाद आज विश्व के समक्ष उपस्थित गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह लोकतंत्र के विरुद्ध युद्ध और मानवता के विरुद्ध अपराध है। यह क्रूरतापूर्ण नरसंहार का एक नया रूप है जो राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता और अंतर्राष्ट्रीय कानून के लिए खतरा है। आतंकवाद एक प्रकार से इक्कीसवीं सदी में मानवता के लिए नई चुनौती है। आतंकवाद मानव जाति के विरुद्ध कुछ सिरफिरों की हिंसा है। आतंकवादी क्रूर, हृदयहीन और विवेकशून्य अपराधी हैं। वे बिना अपराध-बोध के खून-खराबा और अपराध करते हैं। प्रायः सभी आतंकवादी किसी-न-किसी प्रशंसनीय उद्देश्य का दावा करते हैं, जिनके लिए संवैधानिक माध्यम प्रभावकारी नहीं होते। आतंकवादी सरकार हो हतोत्साहित कर अंततः जवाबी हिंसा के लिए विवश कर देते हैं। आतंकवादी एक व्यक्ति को मारकर दस व्यक्तियों को डराना चाहते हैं पिछले कुछ दशकों से भारत आतंकवादी गतिविधियों से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में जम्मू-कश्मीर में सीमा-पार आतंकवाद में वृद्धि हुई है। इनका निशाना देशभर के प्रमुख नगर और प्रमुख संस्थान हैं। हमे आतंकवाद से सख्ती से निपटना होगा।

10. पुस्तकालय की उपयोगिता

पुस्तकालय ज्ञान का मंदिर है। उन्नति के सभी सूत्र पुस्तकालयों में रखी पुस्तकों में सुरक्षित हैं। कोई भी विकास का इच्छुक व्यक्ति इनकी सहायता से मनोवांछित उन्नति कर सकता है। आधुनिक पुस्तकालय बहुत ही व्यवस्थित होते हैं। इसमें लाखों की संख्या में पुस्तकें संगृहीत होती हैं। ये सारी पुस्तकें विषयानुसार अलमारी में अलग-अलग रखी होती हैं। विद्यार्थियों को आरंभ से ही पुस्तकालय का उपयोग करना सीखना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे पुस्तकालय की नियमावली और व्यवस्था को भलीभाँति जान लें और उसे बनाए रखने का दृढ़ संकल्प करें। छात्रों को चाहिए कि वे पुस्तकों को समय पर वापस करें। किसी और को भी उस पुस्तक की आवश्यकता हो सकती है। हमें पुस्तकों को सँभालकर रखना चाहिए। किसी प्रकार के नोट पुस्तकालय की पुस्तकों में नहीं लिखने चाहिए। कुछ लोग पुस्तकों के पृष्ठ या चित्र फाड़ लेते हैं और अपने पास रख लेते हैं जो कि पूरी तरह गलत है। कुछ पुस्तकें दुर्लभ होती हैं, उन्हें चुराकर अपने पास रख लेना सामाजिक संपत्ति की चोरी है। मंदिर और पुस्तकालय दोनों में ही प्रवेश करते समय मन में पवित्रता की भावना होनी चाहिए। पुस्तकालय में किसी प्रकार का शोरगुल या बातचीत नहीं करनी चाहिए। गरिमामय व्यवहार से पुस्तकालय का सदुपयोग हो सकता है।

11. परिश्रम सफलता की कुंजी है

जीवन में सफलता अनायास ही नहीं मिलती। यदि अनायास ही कहीं सफलता मिल भी गई, तो वह सफलता नहीं 'लॉटरी' हो सकती है। जीवन में सफलता परिश्रम एवं प्रयत्न से प्राप्त होती है। भर्तृहरि ने कहा भी है, 'उद्योगिनंपुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः दैवेन देयमिति कापुरुषाः वदन्ति' अर्थात उद्योगी पुरुष को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है। "भाग्य देगा" ऐसा कायर पुरुष कहा करते हैं। भाग्य सुख छोड़कर यथाशक्ति पुरुषार्थी को जीवन में धन, यश, शांति सभी प्राप्त होते हैं, भाग्यवादी को कुछ नहीं मिलता। इसलिए जीवन में शारीरिक श्रम को नकारा नहीं जा सकता। शारीरिक श्रम करने वाला व्यक्ति सदा स्फूर्ति से भरा होता है। परिश्रमी व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर रहता है। प्राकृतिक कारण भी उसके मार्ग को विघ्न बनकर रोक नहीं सकते। सफलता उसी मनुष्य का वरण करती है, जिसने उसके लिए श्रम किया हो। बिना परिश्रम के तो सामने रखी हुई थाली से रोटी का ग्रास भी मुख में नहीं जाता और जाने के बाद भी मुख चलाकर उसे चबाना पड़ता है, तभी वह पेट में जाता है। जीवन में शारीरिक श्रम अनिवार्य है। यह हमें रोगों से मुक्त रखता है और फिर लंबे समय तक हमारे शरीर को स्वस्थ रखता है। हमें शारीरिक श्रम करते हुए हिचक महसूस नहीं करनी चाहिए। श्रम से व्यक्ति जीवन में कठिन-से-कठिन समस्याओं को सुलझा लेता है। यदि वह चाहे तो पर्वतों को काटकर सड़क निकाल सकता है, उन्मादिनी नदियों पर पुल बना सकता है, कंटकाकीर्ण मार्गों को सुगम बना सकता है। ऐसा कौन-सा कार्य है, जो श्रमसाध्य न हो। कर्मवीर तथा दृढ़-प्रतिज्ञ महापुरुषों के लिए संसार का कोई भी कार्य कठिन नहीं होता है।

12. स्वदेशप्रेम

संसार के अन्य देशों की अपेक्षा भारतवर्ष की पावन धरती का सौंदर्य अत्यंत अद्भुत है। हिमालय भारत के माथे का दिव्य मुकुट है तथा हिंद महासागर भारत माता के चरणों को स्पर्श कर धन्य होता है। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति संपूर्ण विश्व में अद्वितीय है। हमारा देश भारत प्रचीनकाल से ही ज्ञान-विज्ञान और शिल्प के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। विश्व में अनेक देशों की

सभ्यताएँ रसातल में लुप्त हो गईं, परंतु हमारी सभ्यता एवं संस्कृति आज भी विश्व के समक्ष गौरव से सिर ऊँचा किए हुए हैं। यहाँ विभिन्न प्रांतों के लोगों के अपने-अपने रीति-रिवाज हैं तथा विभिन्न प्रांतों एवं धर्मों के लोग विभिन्न पर्व मनाते हैं। इस विभिन्नता में भी एक विभिष्ट एकता के दर्शन होते हैं। भारत के निवासियों में देश के गौरव की रक्षा करने के लिए अपने प्राण न्योछावर करने की भावना रहती है। वस्तुत: भावना की दृष्टि से देश की विविधता में अनेक रूप से समन्वय और एकता दृष्टिगत होती है। पिछले कुछ वर्षों से भारत तीव्र गति से विकास कर रहा है तथा विश्व के अग्रणी देशों में अपना स्थान बनाने का प्रयास कर रहा है।

13. आलस किया : सफलता गई

आलस किसी काम के प्रति लापरवाह होना या जी चुराने का नाम है। जब हम किसी काम में तत्परता न दिखाकर उसे टालते जाते हैं और उसके प्रति अनिच्छा प्रकट करते हैं तब यह हमारा आलस ही होता है। आलस करने से अनेक बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती है आलस से हमारे काम बिगड़ जाते हैं। आलसी व्यक्ति भाग्यवादी होते हैं और कर्म करने में विश्वास नहीं करते। इसी कारण उनका कोई भी काम समय पर पूरा नहीं होता। इससे शरीर में भी आलस छाया रहता है और हर समय अस्वस्थ अनुभव करते हैं। हमें सफलता प्राप्त करने के लिए आलस्य को दूर भगाकर परिश्रम करना चाहिए। परिश्रम करने से ही सभी प्रकार की सफलता प्राप्त होती है। पुरुषार्थी व्यक्ति ही परिश्रम कर सकता है। विश्व का इतिहास इस बात का गवाह है कि कठोर श्रम करने वालों ने ही सफलता के शिखर को चूमा है। परिश्रम ही जीवन का सारभूत तत्व है। अत: व्यक्ति को जीवन में अकर्मण्यता का परित्याग करके कठोर परिश्रम करना चाहिए। ध्यान रहे आलस किया तो सफलता हाथ से चली गई।

14. छात्र स्वयं करें।

15. प्लास्टिक की दुनिया

विज्ञान के क्षेत्र में कई आविष्कार हुए हैं, जिनमें से प्लास्टिक का आविष्कार एक क्रांतिकारी आविष्कार था। वज़न में हल्का, टिकाऊ होने के कारण इसका प्रयोग बहुत अधिक बढ़ गया है। बहुत ही कम समय में विमान, उपग्रह, संयंत्रों के निर्माण से लेकर दैनिक उपयोग की छोटी-बड़ी वस्तुओं के निर्माण में इसकी अनिवार्यता का सिक्का जम चुका है। सस्ता होने के कारण इसे प्रत्येक वर्ग के लोगों ने अपनाया है। बड़ी-बड़ी इमारतें, वाहन हों या .फर्नीचर, फ्रिज, मशीन, बर्तन और थैलियाँ हों, हम चारों ओर प्लास्टिक से घिरे हैं। प्लास्टिक की दुनिया ने हमारे जीवन को सुख-सुविधापूर्वक बनाया है परंतु इसका मुख्य दोष यह है कि यह कृत्रिम रासायनिक पदार्थ न तो मिट्टी में मिलता है और न ही पानी में घुलता है। इसलिए इसका कूड़ा चिंता का विषय बन चुका है। गाँवों, शहरों, नदियों, पहाड़ों, जंगलों, सागरों आदि सभी स्थानों में प्लास्टिक की गंदगी जी का जंजाल बन चुकी है। प्लास्टिक से होने वाला प्रदूषण स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। लोग प्लास्टिक की थैलियों को इधर-उधर फेंक देते हैं जिससे नालियों व गटर का पानी अवरुद्ध हो जाता है। जो बीमारियों का कारण है। प्लास्टिक के प्रयोग पर नियंत्रण के प्रयत्न अधिक कारगर सिद्ध नहीं हो रहे हैं। सरकार भी अभी कोई ठोस प्रयत्न नहीं कर पा रही है। इस दिशा में भी इसके आविष्कार के समान ही क्रांतिकारी युद्ध स्तरीय प्रत्यत्न की आवश्यकता है।

16. लोकतंत्र और चुनाव

लोकतांत्रिक प्रणाली में चुनाव का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसके वगैर लोकतंत्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लोकतंत्र में लोगों को अपने मतानुसार प्रतिनिधि चुनकर सरकार बनाने का अधिकार दिया जाता है। भारत में 18 वर्ष और उससे ऊपर की आयु वाले प्रत्येक युवा को मतदान का अधिकार दिया गया है। वे चुनाव में अपना वोट डालकर अपनी इच्छा के अनुसार सरकार का चयन कर सकते हैं। भारत की जनसंख्या का 65 प्रतिशत भाग युवा हैं। इस युवा वर्ग को देश की शासन-व्यवस्था में भागीदार बनाने के लिए मताधिकार मिलना ज़रूरी था। इसके बिना लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता था। लोकतंत्र में मत देने का अधिकार सबसे बड़ा हथियार है। युवा वर्ग मताधिकार के बलबूते पर सरकार बदलने में सक्षम है। मतदान के प्रति युवाओं में जागरूकता का होना बहुत ज़रूरी है। जागरूक मतदाता ही अपने वोट का सही प्रयोग करना जानते हैं। उन्हें अपने मतदान की अहमियत पता होती है। ऐसे में युवाओं को और अधिक जागरूक बनाने के लिए सघन अभियान चलाया जाना चाहिए। अधिक-से-अधिक युवाओं को मतदान करने के लिए जाना चाहिए। इसके साथ उनका अपना भविष्य भी जुड़ा हुआ होता है। इसके लिए सर्वप्रथम युवाओं को अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वाना होगा तथा मत देने के लिए अवश्य जाना होगा।

17. ई-कचरा

विज्ञान ने जहाँ हमारे जीवन के लिए सुविधाएँ जुटाई हैं, वहीं उसके अविवेकी उपयोग ने जीवन के लिए खतरा भी खड़ा कर दिया है। यह खतरा एटॉमिक एनर्जी वाला भी है और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से उपज रहे ज़हर का भी है, जो कभी प्लास्टिक के रूप में, कभी पॉलिथीन बैग के रूप में, तो कभी वैज्ञानिक उपकरणों के रूप में सामने आ रहा है। आज मनुष्य वैज्ञानिक उपकरणों का गुलाम भर बनकर रह गया है। कंप्यूटर और स्मार्ट फ़ोन की जादुई दुनिया ने हमें एक उपभोक्ता बनाकर छोड़ दिया है। वे हमारे लिए बस तकनीक हैं, जो पुरानी जड़ताओं को नई ताकत व गति दे रही हैं। पहली तकनीक पुरानी पड़ी नहीं कि नई तकनीक जुड़ जाती है। ये पुराने गैजेट्स कबाड़ नहीं तो और क्या हैं, जो प्रश्नचिह्न बनते जा रहे हैं। इन्होंने धरती से अंतरिक्ष तक किसी स्थान को नहीं छोड़ा है। हमारे घरों से निकला कचरा, कार्यस्थलों से निकला कचरा, उपग्रह के रूप में व्यर्थ सिद्ध हो रहे उपग्रहों के टूटे-फूटे अंश सभी कुछ तो भूमि पर, सागर में, अंतरिक्ष में बस केवल तैर रहे हैं। यही तो ई-कचरा है। विश्व में अब तक जितना परमाणु कचरा एकत्रित हो गया है, उससे लगातार निकलती रेडियो तरंगों से होने वाला नुकसान कितना भयानक है, इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस विनाश को हम स्वयं बुलावा दे रहे हैं। इसके निस्तारण में लगे लोग सीधे ही प्रभावित हो रहे हैं। त्वचा का कैंसर और स्नायु विकृतियाँ भी बढ़ती जा रही हैं। इन सबके प्रति अभी से सचेत होना आवश्यक है और इसे अपेक्षित कार्ययोजना का अंग बनाना भी आवश्यक है। ई-कचरा-नियंत्रण के बिना हमारी इलेक्ट्रॉनिक क्रांति असफल हो जाएगी।

18. आज की बचत कल का सुख

वर्तमान समय में खर्च करने की प्रवृति निरंतर बढ़ती जा रही है। यह ठीक है कि लोगों की आमदनी बढ़ रही है, पर सारी आमदनी को खर्च कर देना अक्लमंदी का काम नहीं है। अपनी आय का एक हिस्सा बचाना बहुत ज़रूरी है। यह बचत हमारे भावी जीवन को सुरक्षित बनाती है। भविष्य अनिश्चित है। उसके लिए अभी से कुछ उपाय करने ज़रूरी होते हैं। भविष्य में हमारी आय घट भी सकती है और अनपेक्षित खर्चे भी आ सकते हैं। उस समय हम घबराएँ नहीं, इसके लिए अभी से बचत करके चलना सही होता है। बचत करने की एक आदत बनानी चाहिए। बचत करने से हममें आत्मविश्वास का संचार होता है। आज की बचत कल हमारे काम आएगी। यही कारण है कि सरकार भी बचत योजनाओं को प्रोत्साहन देती रहती है। हाँ हमें बचत ज़बर्दस्ती नहीं करनी चाहिए। अपने खर्चों के बाद जो धन बचे उसे बचत योजना में लगाना चाहिए। यह बचत हमारे स्वयं के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होती है।

19. मेरा प्रिय कवि

हिंदी के कवियों में मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है तो निर्गुणवादी संत कवि कबीर ने। हिंदी के इस निराले कवि के जन्म के बारे में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कुछ लोगों का मानना है कि कबीर का जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था, जो इन्हें लोकलाज के भय से एक तालाब के किनारे छोड़ आई। एक निस्संतान जुलाहे दंपति ने इनका पालन-पोषण किया। कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। इन्होंने अपने बारे में स्वयं कहा है—मसि कागद छुयो नहिं, कलम गह्यो नहिं हाथ। कबीर कुछ बड़े हुए तो अपने पिता के कार्य में हाथ बँटाने लगे। एक छोटी जाति में पालन-पोषण होने के कारण इन्हें कोई भी बड़ा संत या आचार्य अपना शिष्य बनाने को शायद ही तैयार होता, पर कबीर ने जिस प्रकार तत्कालीन प्रसिद्ध संत रामानंद को अपना गुरु बनाया, वह आश्चर्यजनक है। कबीर ने तत्कालीन समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों, ढोंग-ढकोसलों तथा कुरीतियों के विरुद्ध अपनी जो सशक्त आवाज़ बुलंद की, वह किसी क्रांति से कम नहीं है। उन्होंने निर्भीक स्वर में तत्कालीन ढोंगी तथा स्वयं को संत-महात्मा कहलाने वाले लोगों को जिस तरह से ललकारा, वैसा आज तक कोई अन्य कवि नहीं कर पाया। क्या हिंदू, क्या मुसलमान, दोनों ही उनकी पैनी नज़रों से नहीं बच पाए। जाति-पाँति, मूर्तिपूजा, तीर्थ-गमन, तंत्र-मंत्र, मांस-भक्षण जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध इन्होंने सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया। कबीर ने सत्संगति, गुरु-महिमा जैसी अनेक बातों पर प्रकाश डाला है। मुझे कबीर की सबसे बड़ी विशेषता यही लगती है कि उन्होंने लोकवाणी में सीधे-सादे शब्दों में ऐसी चुभती बातें कही हैं, जिनका उत्तर न तो तत्कालीन पंडितों एवं ज्ञानियों के पास था और न ही मौलवियों के पास। उनकी व्यंग्योक्ति सुनकर लोग विस्मित होकर रह जाते थे। एक अनपढ़ व्यक्ति ने अपनी साखियों से जिस प्रकार के गूढ़ रहस्यों तथा तत्व ज्ञान की बातें व्यक्त कीं, उसकी मिसाल हिंदी में तो क्या, दुनिया के किसी साहित्य में मिलनी दुर्लभ है। कबीर की उलटबासियों का अर्थ बड़े-बड़े विद्वान और

शोधकर्ता ही निकाल पाते हैं। उनकी रचनाओं में एक जादू था, जिसका सीधा असर आज भी हृदय पर पड़ता है। किसी ने ठीक ही कहा है–'चुभ-चुभकर भीतर चुभै, ऐसी कहै कबीर'।

20. समय का सदुपयोग

बीता हुआ समय संसार की समस्त संपदा देकर भी लौटाया नहीं जा सकता। यह वह कुंजी है, जिससे सफलता का द्वार खोला जा सकता है। वास्तव में, समय ही जीवन है। इसकी गति को रोकना असंभव है। समय की महत्ता अनमोल है। एक क्षण को नष्ट करने का अर्थ है, जीवन के एक अंश को नष्ट करना। समय के मूल्य एवं महत्व को न पहचानने वाला सदैव पछताया है। समय की परख भी एक कला है, जिसे सीखने पर सफलता कदम चूमती है। गांधी जी समय की परख को सर्वाधिक महत्व देते थे। जो व्यक्ति समय मिलने पर भी अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाते, वे जीवन में असफल रहते हैं। समय का सदुपयोग करने से हम जीवन को सार्थक बना सकते हैं। जो विद्यार्थी समय का सदुपयोग करते हैं, हमेशा सफल होते हैं। मनुष्य समय के सदुपयोग से अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति कर सकता है। समय के सदुपयोग से आत्मविश्वास की भावना जाग्रत होती है। घड़ी की निरंतर बढ़ती सुइयाँ हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। समय और लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। जो विद्यार्थी पूरे वर्ष पढ़ाई की ओर ध्यान नहीं देते और परीक्षा में फेल हो जाते हैं तो पछताते हैं। बाद में पछताने का कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि बीता समय कभी वापस नहीं आता है। जो व्यक्ति समय की कद्र नहीं करता, समय उसकी कद्र नहीं करता। समय का दुरुपयोग करने वालों को समय एक दिन अवश्य नष्ट कर देता है। समय ने बड़ों-बड़ों को खाक में मिला दिया है। महान पुरुष अपने जीवन में समय का सदुपयोग करके ही सफल एवं प्रसिद्ध हुए। अतः विद्यार्थियों को भी महापुरुषों के उदाहरणों से समय के सदुपयोग की सीख लेनी चाहिए क्योंकि राष्ट्र के उत्थान में विद्यार्थियों की अहम् भूमिका रहती है। आज का काम कल पर छोड़ना तनिक भी उचित नहीं है। समय की महत्ता को समझते हुए इसका सदुपयोग करना चाहिए।

2. पत्र-लेखन

1. अ॰ब॰स॰ अपार्टमेंट
गोमती नगर, लखनऊ (उ॰प्र॰)

08 जनवरी, 20XX
प्रिय मित्र
दिपेश

कल तुम्हारी माता जी का पत्र मुझे मिला। पढ़कर बहुत दुख हुआ कि इस बार परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने की वजह से तुमने अपनी पढ़ाई छोड़ दी है। चाची जी ने लिखा है कि तुम पढ़ाई को पूरी तरह छोड़कर खेल-कूद में ही व्यस्त रहते हो। यह स्थिति चिंताजनक है।

प्रिय मित्र, हार-जीत, उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण तो ज़िंदगी के हर पड़ाव पर आएगा। मगर एक बार अनुत्तीर्ण होने या हार जाने से हिम्मत तो नहीं हार जाते, बल्कि हमें चाहिए कि हम अपनी हार से सीखें और जो गलतियाँ हम पहले कर चुके हैं उन्हें न दोहराएँ। मेरे कहने का तात्पर्य है कि पढ़ाई से ही तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य का निर्माण होगा। जीवन में खेल-कूद ज़रूरी है पर इन्हें पढ़ाई की कीमत पर नहीं किया जाना चाहिए। अपना मन पढ़ाई में लगाओ। समय बीत जाने पर पछतावा करने के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रह जाएगा। तुमसे तुम्हारे परिवार को बहुत अपेक्षाएँ हैं। तुम्हें जीवन में बहुत आगे तक जाना है। अभी से पढ़ाई के प्रति सचेत रहना आवश्यक है। तुम्हें घर पर 4-5 घंटे अवश्य पढ़ाई करनी चाहिए।

आशा है तुम मेरी बात पर गंभीरतापूर्वक विचार कर उन्हें अपनाओगे। पत्रोत्तर शीघ्र देना।

चाची जी को सादर प्रणाम।

तुम्हारा मित्र
अनुभव

2. स्वर्ण जयंति छात्रावास
जयपुर, राजस्थान
12 मार्च, 20XX
पूज्य पिता जी
चरणस्पर्श!

आपका कृपा-पत्र प्राप्त हुआ। मेरे विद्यालय के प्रधानाचार्य ने मेरी असंतोषजनक प्रगति पर आपको जो पत्र लिखा है, उससे आपको अवश्य दुख पहुँचा होगा। मैंने भी इसके कारणों का विश्लेषण किया है।

पिछले एक मास तक मैं क्षेत्रीय खेलों में अत्यधिक व्यस्त रहा, इसी कारण मैं पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान नहीं दे पाया। खेलों पर इतना अधिक समय देना मेरी भूल थी। कक्षा में पढ़ाई गई विषय-सामग्री भी मुझसे छूट गई। खेलों की थकान ने मुझे अस्वस्थ कर दिया। पिछले एक-डेढ़ मास का समय ऐसे ही निकल गया। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में मैं अपना मुख्य ध्यान पढ़ाई पर ही केंद्रित रखूँगा। अगली परीक्षा में मैं अपनी पिछली कमी को पूरा कर दिखाऊँगा। आशा है कि आप मेरी बात का विश्वास करेंगे।

पूज्य माता जी को चरणस्पर्श तथा प्रगति को स्नेह कहना।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
प्रवेश

प्रश्न सं॰ 3 छात्र स्वयं करें।

4. एफ–92, बुराड़ी
नई दिल्ली

07 मार्च, 20XX

आदरणीय मामा जी
सप्रेम नमस्कार!

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरा जन्मदिन दिनांक 23 अप्रैल, 20XX को है। इस अवसर पर मैं और मेरा परिवार आपको सपरिवार सादर आमंत्रित करते हैं। मेरे पिता जी ने मेरे जन्मदिन के उपलक्ष्य में बहुत बड़ा कार्यक्रम रखा है, जिसमें संगीत, नृत्य एवं बहुत से छोटे-छोटे कार्यक्रम रखे हैं जो कि सुनकर ही बहुत रोमांचक लग रहे हैं। इसके अलाबा बहुत से मेहमान एवं मेरे मित्र आदि आएँगे। मामाजी आपसे आपसे अनुरोध है कि आप अपने परिवार के साथ अवश्य आइए एवं मुझे मेरे जन्मदिन के मौके पर आशीर्वाद दीजिए। मुझे पूरा विश्वास है कि आप मुझे निराश नहीं करोगे। पत्र के साथ औपचारिक निमंत्रण–पत्र भी भेज रहा हूँ।

आप घर पर जन्मदिन से एक–दो दिन पूर्व ही पहुँचने का प्रयास करना। मैं आपका इंतज़ार करूँगा। आपके बिना मुझे सब कुछ फीका लगेगा। मेरी छोटी बहन ने भी आपके आने के लिए विशेष आग्रह किया है। हम सभी आपका इंतज़ार करेंगे। शेष मिलने पर।

आपका
आयूष

प्रश्न सं॰ 5, 6, 7 छात्र स्वयं करें।

8. साकेत
नई दिल्ली

10 नवंबर, 20XX

पूजनीय पिता जी
सादर नमस्कार

यहाँ सब कुशलपूर्वक हैं। आशा है, हमारे परिवार में भी सब स्वस्थ व प्रसन्न होंगे। पिता जी, मुझे दिल्ली छोड़कर आए लगभग तीन वर्ष हो गए हैं। इन तीन वर्षों में हमारी दिल्ली ने अपना स्वरूप कितना बदल लिया होगा, मैं सोच भी नहीं सकती। मेट्रो, फ़्लाईओवर, ब्रिज, राजमार्गो से सजी गगनचुंबी इमारतों और मॉलों से अपना वैभव दर्शाती दिल्ली अत्यंत मनमोहक लगती होगी। कल्चरल हेरिटेज के रूप में जानी जाने वाली दिल्ली अब अपना अंतरराष्ट्रीय स्वरूप भी पाने में कामयाब हो गई है। विश्व के ए-वर्ग के किसी भी नगर से अब कम नहीं है हमारी दिल्ली। फूलों से भरे चौराहे और हरियाली से परिपूर्ण फुटपाथों के किनारे इसे कहीं से सीमेंट से उगा हुआ नगर सिद्ध नहीं करते। यह एक आधुनिक हरा-भरा नगर है, जिसको देखने की चाह मेरे मन में जगती है। वास्तव में कॉमनवेल्थ गेम्स ने इसकी काया ही पलट दी है। आशा है मेरा पत्र पढ़कर आप मुझे जल्दी ही दिल्ली वापस बुलाओगे, जिससे मैं अपने शहर एवं देश की राजधानी दिल्ली को देख सकूँ। इस ग्रीष्मावकाश में अपने परिवार के साथ समय बिताना चाहती हूँ। हम सभी मिलकर दिल्ली देखेंगे और आधुनिक दिल्ली का स्वाद चखेंगे।

आपकी पुत्री
अपर्णा
मैसूर

9. क॰ख॰ग॰ कॉलोनी
चंडीगढ़

11 मई, 20XX

व्यवस्थापक
हार्बर प्रेस इंटरनेशनल
दरियागंज, नई दिल्ली

विषय : वी॰पी॰पी॰ द्वारा पुस्तकें भिजवाने का अनुरोध

महोदय
मुझे आपके पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। आपसे अनुरोध है कि मेरे अधोलिखित पते पर ये पुस्तकें शीघ्र वी॰पी॰पी॰ द्वारा भिजवाने का कष्ट करें। पुस्तकें भेजते समय कृपया देख लें कि पुस्तकें नवीनतम संस्करण की हों, कटी-फटी न हों, उनकी पैकिंग ठीक से की गई हो।

अग्रिम धनराशि के रूप में पाँच सौ रुपये का बैंक ड्राफ्ट भी पत्र के साथ संलग्न है। जिसका क्रमांक 7329..... है। वी॰पी॰पी॰ मिलते ही मैं शेष धनराशि का भुगतान कर दूँगा।

पुस्तकों की सूची	**प्रतियाँ**
1. व्याकरण वृक्ष, कक्षा IX	एक प्रति
2. व्याकरण शाखी, कक्षा IX	एक प्रति

धन्यवाद
भवदीय
अ॰ब॰स॰

प्रश्न सं॰ 10 छात्र स्वयं करें।

11. क॰ख॰ग॰ विद्यालय
देहरादून, उत्तराखंड

10 सितंबर, 20XX

प्रिय मित्र सोमेश
सप्रेम नमस्ते
आशा है तुम सकुशल होगे। तुमने मेरे जन्मदिन पर जो मिठाई एवं शुभकामना संदेश भेजा है, उसके प्रति मैं तुम्हारा आभार व्यक्त करता हूँ। यह मिठाई एवं शुभकामना संदेश मेरे प्रति तुम्हारे स्नेह का परिचायक है। तुम्हारी भेजी हुई मिठाई एवं उपहार के रूप में घड़ी है, वह मेरे सभी परिजनों को पसंद आई है। यह उपहार मुझे समय का पाबंद बनाएगा। मुझे घड़ी की आवश्यकता भी बहुत थी। इस अमूल्य भेंट को मैं सदैव सँभालकर रखूँगा।

अपनी माता जी को मेरा सादर प्रणाम कहना।

तुम्हारा प्रिय मित्र
उमेश
नई दिल्ली

प्रश्न सं॰ 12, 13, 14 एवं 15 छात्र स्वयं करें।

16. मोती नगर
कर्मपुरा, नई दिल्ली

10 फरवरी, 20XX

प्रिय सहेली मालिनी
मधुर स्मृतियाँ!

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे उत्तर देने में देरी इसलिए हुई कि पिछले सप्ताह मैं हवाई जहाज़ से अहमदाबाद गई थी। मेरी यह पहली हवाई-यात्रा थी। यह यात्रा बहुत आनंददायक रही। हम पालम हवाई अड्डे से इंडियन एयरलाइंस के विमान से अहमदाबाद गए थे। हवाई अड्डे पर अनेक जाँच-परीक्षणों से गुज़रना पड़ा। मुझे यह सब बड़ा ही विचित्र लग रहा था। इसके बाद हम एक शानदार बस में बैठकर वायुयान तक गए। वहाँ सीढ़ियाँ चढ़कर वायुयान में घुसे। अंदर का दृश्य बहुत ही आकर्षक था। सजी हुई कुर्सियों की कतारें, वातानुकूलित कक्ष, इधर-उधर जाती परिचारिकाएँ। सभी कुछ अच्छा एवं सुखद लग रहा था। हमें सीट बेल्ट बाँधने को कहा गया। बेल्ट बाँधने के थोड़ी देर बाद ही वायुयान अहमदाबाद की ओर उड़ चला। थोड़ी ही देर में दिन का भोजन आया। कुछ देर बाद खाने के लिए आइसक्रीम आई। वायुयान अहमदाबाद की ओर बढ़ा चला जा रहा था। मुझे एक अजीब से आनंद का अनुभव हो रहा था। डेढ़ घंटे की आरामदायक एवं सुखद यात्रा के पश्चात हम अहमदाबाद हवाई अड्डे पर जा पहुँचे। हमें रास्ते में कॉफ़ी भी पिलाई गई।

वायुयान धीरे-धीरे रन-वे पर चल रहा था। अचानक वह रुक गया। धीरे-धीरे सभी यात्री वायुयान से बाहर निकल आए। यह यात्रा मुझे सदा याद रहेगी।

तुम्हारी सहेली
उमा गुप्ता

3. संवाद-लेखन

1. अध्यापक – बच्चो! आज हम एक अहम् विषय पर चर्चा करेंगे।

विद्यार्थी 1 – किस विषय पर?

अध्यापक – आज तुम सब अपनी राय रखो की हिंदी भाषा के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?

विद्यार्थी 1 – सर, मेरे विचार में हिंदी हमारे लिए बहुत अहम् है। हमें हमारी मातृभाषा की अहमियत को यूं ही बरकरार रखना चाहिए।

विद्यार्थी 2 – हिंदी बेशक से हमारी राजभाषा और राष्ट्रभाषा जैसा है, परंतु मेरे विचार में आज के समय में हम हिंदी की महत्ता खोते जा रहे हैं।

अध्यापक – तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?

विद्यार्थी 2 – आजकल हिंदी के क्षेत्र में लोगों का रूझान बहुत कम हो गया है और अंतरराष्ट्रीय भाषाओं की तरफ रूझान ज़्यादा हो गया है।

विद्यार्थी 1 – परंतु मेरे विचारों में यह सत्य नहीं है।

अध्यापक – यह कुछ हद तक सत्य है क्योंकि आजकल अंतरराष्ट्रीय भाषाओं को अधिक महत्ता दी जाती है और स्कूलों में भी इन्हीं भाषाओं को ज़्यादा तवज्जों दी जाने लगी है।

विद्यार्थी 1 – अगर अंतरराष्ट्रीय भाषाओं को महत्व दिया जा रहा है तो हिंदी के महत्व को भी समझा जाना चाहिए।

अध्यापक – तुम्हारे विचार इस बारे में बिल्कुल सही हैं।

2. विद्यार्थी – भैया क्या आपके पास हिंदी व्याकरण की पुस्तक है?

पुस्तक विक्रेता – जी हाँ, बताइए आपको कौन-सी कक्षा के लिए हिंदी व्याकरण की पुस्तक चाहिए?

विद्यार्थी – भैया, मुझे कक्षा 9, कोर्स-ए के लिए हिंदी व्याकरण की पुस्तक चाहिए।

पुस्तक विक्रेता – हाँ, है न! वैसे तो मेरे पास कई प्रकाशकों की हिंदी व्याकरण की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

विद्यार्थी – जो श्रेष्ठ पुस्तक है वह बताएँ।

पुस्तक विक्रेता – मैं आपको व्याकरण शाखी जो हार्बर प्रेस द्वारा प्रकाशित है, लेने की सलाह दूँगा।

विद्यार्थी – व्याकरण शाखी ही क्यों?

पुस्तक विक्रेता – क्योंकि यह पुस्तक त्रुटि रहित और शत-प्रतिशत पाठ्यक्रम के अनुरूप है।

विद्यार्थी – ठीक है भैया, मुझे इसकी उचित छूट के साथ एक कॉपी दे दीजिए।

पुस्तक विक्रता – चिंता मत करो।

विद्यार्थी – धन्यवाद भैया।

3. छात्र स्वयं करें। **4.** छात्र स्वयं करें। **5.** छात्र स्वयं करें। **6.** छात्र स्वयं करें।
7. छात्र स्वयं करें। **8.** छात्र स्वयं करें। **9.** छात्र स्वयं करें। **10.** छात्र स्वयं करें।
11. छात्र स्वयं करें। **12.** छात्र स्वयं करें। **13.** छात्र स्वयं करें। **14.** छात्र स्वयं करें।
15. छात्र स्वयं करें। **16.** छात्र स्वयं करें। **17.** छात्र स्वय्र करें। **18.** छात्र स्वयं करें।
19. छात्र स्वयं करें। **20.** छात्र स्वयं करें। **21.** छात्र स्वयं करें। **22.** छात्र स्वयं करें।

4. लघुकथा-लेखन

1. **स्वावलंबन का सुख**

   यह कहानी मेरे पड़ोस में रहने वाली एक लड़की की है। लड़की का नाम ज्योति है। मैंने ज्योति के जीवन में घटी सभी परेशानियों को देखा है और उसने कैसे हिम्मत से उन परेशानियों का सामना करते हुए कैसे आगे बढ़ी है यह भी जाना है। उसके जीवन की यह घटना हम सबके लिए कहानी बन गई है जिससे हमें सिख लेनी चाहिए।

   ज्योति बहुत ही सरल और समझदार लड़की थी। पढ़ाई में वह बहुत अच्छी थी। वह एक मध्यम परिवार से थी। पढ़ाई होने के बाद उसकी शादी करवा दी। शादी के बाद ही ज्योति को उसके ससुराल वाले तंग करने लगे थे। उसे दहेज के लिए तंग करना शुरू कर दिया। ज्योति कुछ समय तक चुप रही और सभी अन्याय सहती रही। कहते हैं न अन्याय भी कुछ हद तक ही सहा जाता है। ज्योति ने अब दहेज के खिलाफ़ आवाज उठाई। उसने महिला पुलिस थाने में जाकर शिकायत दर्ज करवाई। ज्योति किसी से डरी नहीं, उसने साहस से काम लिया और अपनी मेहनत से सरकारी नौकरी के लिए तैयारी की और परीक्षा पास करके नौकरी लग गई। वह अपने जीवन में खुश थी, किसी के ऊपर निर्भर नहीं थी। जब उसकी नौकरी लग गई तब उसके ससुराल वाले उससे माफी माँगने लगे लेकिन उसने उन्हें अच्छे से सबक सिखाया और अब वह अपना जीवन अपने हिसाब से व्यतीत करती है। वह किसी की गुलाम नहीं है। सच में उसे देखकर हिम्मत मिलती है।

2. छात्र स्वयं करें।

3. एक किसान के पास एक गधा था। वह किसान अपने गधे से सारा काम लिया करता था। वह गधे को अपने साथ हमेशा बाज़ार लेकर जाया करता था। जिससे सामान को उसकी पीठ पर रखकर लेकर आए। किसान जब भी अपने खेत पर जाता था। अपने गधे को भी साथ लेकर जाया करता था। क्योंकि वह उस गधे से सभी कार्य करवाता था। लेकिन गधा सोचता था कि किसान मुझे खाने को ज्यादा नहीं देता है, लेकिन मुझसे बहुत ज्यादा काम करवाता है। जिससे मेरे शरीर में भी दिक्कतें आनी शुरू हो गई हैं। एक दिन वह किसान बाज़ार जाने के लिए तैयार हो रहा था, तभी उसने अपने गधे को खड़ा किया और उस पर सामान रखने लगा। सामान रखते-रखते ही गधा नीचे बैठ गया, अब गधा समझ चुका था कि अगर मैं रोज़-रोज़ काम पर जाऊँगा, तो यह मुझे बहुत ही कमजोर बना देगा। जिससे मुझे आगे चलने में भी परेशानी होगी। इसलिए गधा चलने को तैयार नहीं था। किसान ने सोचा यह गधा आज काम पर क्यों नहीं जा रहा है। अगर यह नहीं जाएगा तो मैं सामान को कैसे लेकर आऊँगा। तभी किसान ने सोचा कि मुझे इंतज़ार करना चाहिए। कल ठीक हो जाएगा, तभी मैं कल बाज़ार जाऊँगा। जब अगली सुबह किसान उठा, तो देखने लगा कि अभी गधा कैसा है, जब वह गधे के पास गया, तो गधा वैसे ही बैठा था, इसका मतलब किसान सोच रहा था कि यह गधा काम करने के लिए तैयार नहीं है। उसके बाद किसान ने गधे के ऊपर बहुत सारा सामान रख दिया और एक डंडा उठाया। गधे ने डंडे को देखा, किसान ने सोचा कि अगर यह डंडा देखकर डर गया है। इसका मतलब यह चलने के लिए तैयार है और यह इसलिए नहीं जा रहा था क्योंकि इस पर समान ज्यादा रखा हुआ था। गधे ने सोचा कि इसने मुझे डंडे के सहारे खड़ा किया है। इसलिए मैं बाज़ार में इसको जरूर मज़ा चखाऊँगा, किसान और गधा बाज़ार में पहुँचे और सामान भी ज्यादा खरीद लिया गया और उसके बाद किसान भी गधे के ऊपर बैठ गया। सारा सामान भी उसी पर रखकर आगे बढ़ने लगा, कुछ दूरी तय करने के बाद ही गधे ने कीचड़ में किसान को गिरा दिया और सारा सामान भी वहीं पर गिर गया। अब किसान को बहुत ज्यादा गुस्सा आ रहा था। वह उठा, उसने डंडा उठाया और उसे पीटना शुरू किया। गधा वहाँ से भागता हुआ अपने घर की ओर जाने लगा। किसान भी जैसे-तैसे अपने सामान को लेकर घर पहुँचा और देखा गधा वहीं पर खड़ा है। उसने गधे को पीटना शुरू कर दिया। गधे को अच्छा नहीं लग रहा था। इसलिए गधे ने भी किसान पर हमला शुरू कर दिया, उधर किसान डंडे से पीट रहा था और गधा भी उस पर हमला कर रहा था। ऐसा देखकर कुछ लोग वहाँ पर आ गए और हँसने लगे। क्योंकि आज इंसान और गधे के बीच में लड़ाई हो रही थी। कुछ देर बाद लोगों ने दोनों को आपस में छुड़ाया।

4. बचपन के वह दिन बहुत अच्छे और मासूम थे। जब हमें किसी भी बात की चिंता नहीं होती थी। पूरा समय शरारतों में और खेलने में निकल जाता था। कोई हमें रोकता नहीं था। बचपन के दिनों में मार भी बहुत पड़ती थी लेकिन प्यार भी बहुत मिलता था। यह आज एहसास होता है। बालपन की वह चंचलता आज भी याद आती है, जब छोटी-छोटी बातों के लिए अपने माता-पिता के सामने मचल जाते थे। तरह-तरह के खिलौनों का संग्रह करना, घर-घर खेलना आदि। मैं अपने बचपन की बात करूँ तो मैं बहुत शरारती थी। सबसे लड़ना और मारना, तंग करना आदि मेरे प्रिय शौक थे। एक बार मैंने स्कूल में अपने साथ पढ़ने वाली लड़की का पूरा खाना खा लिया और उसे बताया भी नहीं। जब उसे पता चला तो वह बहुत रोई और उसने मैडम से शिकायत लगा दी। मैडम से स्कूल में बहुत मार पड़ी। यह बात घर तक पहुँच गई। घर पर आकर भी मार पड़ी। जब धीरे-धीरे बड़े हुए, समझ आने लगा। शरारतें बचपन में ही अच्छी लगती हैं।

5. एक दिन की बात है कपिल खींझते हुए बोला–“अरे इतने दिनों से घर में बैठे-बैठे बोर हो रहा था सोचा ज़रा यार-दोस्तों से मिल आऊँ। पर क्या पता था की पुलिस गेट के बाहर ही खड़ी है? चलो फिर से देखता हूँ शायद वह पुलिस वाला चला गया हो”। कपिल धीरे से गेट के बाहर झाँकने लगा पुलिस वाले को न देखकर बड़ा खुश हुआ और छुपते-छुपाते अपने दोस्त संजय के घर पहुँच गया। पर यह क्या! संजय ने तो बाहर आने से ही मना कर दिया। बोला–“माफ़ करना कपिल भाई, मैं तो इस समय लॉकडाउन का कड़ाई से पालन कर रहा हूँ। मेरी सलाह मानो तुम भी पालन करो और घर लौट जाओ, इसी में देश की और हमारी भलाई है।”

दोस्त की बात सुनकर कपिल बोला–“ठीक है तुम डरकर बैठे रहो मैं कौशिक के यहाँ जा रहा हूँ।” यह कहते हुए वह गुस्से में आगे बढ़ गया। रास्ते में एक अजनबी दिखा जो उसी तरफ़ जा रहा था। कपिल के कहने पर उसने लिफ्ट दे दी और दूसरे मोहल्ले तक छोड़ दिया।

कपिल खुशी-खुशी धन्यवाद देते हुए बोला–“भाई तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो?”

अजनबी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया–“भाई मुझे नहीं पहचाना? मैं कोरोना हूँ तुम जैसे लोगों के लिए ही बाहर घूमता रहता हूँ।”, तब से कपिल अस्पताल में है।

6. मेरे पड़ोस में एक मशहूर चित्रकार रहता था। एक रोज़ की बात है उसने बहुत सुंदर एक पेटिंग बनाई और उसे नगर के बीचोंबीच लटका दिया और उस पर नीचे लिख दिया कि जिस किसी को भी इसमें कमियाँ नज़र आए वह उस जगह पर निशान लगा दे उसने शाम को देखा तो बहुत दुखी हुआ क्योंकि उसकी पूरी तस्वीर पर निशान लगे हुए थे और वह पूरी तरह से खराब हो चुकी थी उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि अब वह क्या करे।

इसी दुखी मन वाली स्थिति में वह बैठा था तभी मैं उसके पास गया और उससे दुखी होने का कारण पूछा। चित्रकार ने मुझसे अपनी समस्या बताई। इस पर मैंने उसे कहा कल एक दूसरी तस्वीर बनाना और उसे भी शहर के बीचोंबीच लटका देना और नीचे लिख देना कि इस तस्वीर में जिस किसी को भी कोई कमी नज़र आए तो उसे ठीक कर दे। चित्रकार ने अगले दिन यही किया। शाम को जब उसने तस्वीर देखी तो बड़ा हैरान हुआ, क्योंकि किसी ने तस्वीर पर कुछ भी नहीं किया था। वह संसार की नीति अब तक समझ चुका था। किसी की कमियाँ निकालना आसान होता है। बड़ी आसानी से लोग किसी की बुराई और निंदा करते हैं, लेकिन उस कमी को दूर करना उतना ही मुश्किल होता है। अचानक इस छोटी-सी घटना ने मुझे बहुत दुखी कर दिया।

7. नौवीं कक्षा की हिंदी की क्लास चल रही थी। शिक्षक महोदय ने छात्रों से ‘मेरा सपना’ विषय पर निबंध लिखने को कहा। सभी बच्चों ने अपने-अपने हिसाब से निबंध लिखे। किसी का सपना इंजीनियर बनने का था तो किसी का डॉक्टर। किसी को नृत्य में महारत हासिल करनी थी तो किसी को गायन में। हर बच्चा कुछ बड़ा करने का ही सपना देख रहा था। अध्यापक हर बच्चे का निबंध चेक कर रहे थे। मैंने लिखा कि मैं बड़े होकर खूब पैसा कमाना चाहता हूँ, ताकि उन पैसों से एक बस खरीद सकूँ। अध्यापक महोदय की समझ में नहीं आया कि आखिर मैं बस खरीदकर क्या करूँगा? लेकिन जैसे ही अध्यापक महोदय ने आगे निबंध पढ़ा, वे सब कुछ समझ गए।

मैंने लिखा था–मेरे पापा के पास कार है। उसमें सिर्फ़ चार ही लोग बैठ सकते हैं। इसलिए कहीं भी जाना रहता है तो मेरे मम्मी-पापा और हम दोनों बहन-भाई ही जाते हैं। मेरे दादा-दादी घर पर ही रहते हैं। मेरे दादा-दादी बहुत अच्छे हैं। वे मुझसे

बहुत प्यार करते हैं। मैं भी उन्हें बहुत प्यार करता हूँ। जब भी हम चारों घूमने जाते हैं तब उन दोनों का चेहरा उदास हो जाता हैं। मुझे लगता है कि दादा जी और दादी जी भी हमारे साथ घूमने चलें। पापा कहते हैं कि उन दोनों में से एक व्यक्ति की तो कार में जगह हो सकती है, लेकिन दोनों की जगह नहीं हो सकती। अब दोनों में से किसको बैठाएँ और किसको छोड़ें... इसलिए दोनों को ही छोड़ देते हैं! बस इसलिए मैं पैसा कमाकर बस खरीदना चाहता हूँ।

8. मनुष्य को अपने विकास के लिए समाज की आवश्यकता हुई। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए समाज की प्रथम इकाई के रूप में परिवार का उदय हुआ। क्योंकि बिना परिवार के समाज की रचना के बारे में सोच पाना असंभव था। समुचित विकास के लिए प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सुरक्षा का वातावरण का होना नितांत आवश्यक है। परिवार में रहते हुए ही भावी पीढ़ी को उचित मार्ग-निर्देशन देकर जीवन संग्राम के लिए तैयार किया जा सकता है। आज भी संयुक्त परिवार को ही संपूर्ण परिवार माना जाता है। वर्तमान समय में भी एकल परिवार को एक मज़बूरी के रूप में ही देखा जाता है। हमारे देश में आज भी एकल परिवार को मान्यता प्राप्त नहीं है। औद्योगिक विकास के चलते संयुक्त परिवारों का बिखरना जारी है। परंतु आज भी संयुक्त परिवार का महत्व कम नहीं हुआ है। संयुक्त परिवार के महत्व पर चर्चा करने से पूर्व एक नज़र संयुक्त परिवार के बिखरने के कारणों एवं उसके अस्तित्व पर मँडराते खतरे पर प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं। संयुक्त परिवारों के बिखरने का मुख्य कारण है–रोज़गार पाने की आकांक्षा। बढ़ती जनसंख्या तथा घटते रोज़गार के कारण परिवार के सदस्यों को अपनी जीविका चलाने के लिए गाँव से शहर की ओर या छोटे शहर से बड़े शहरों को जाना पड़ता है और इसी कड़ी में विदेश जाने की आवश्यकता पड़ती है। परंपरागत कारोबार या खेतीबाड़ी की अपनी सीमाएँ होती हैं, जो परिवार के बढ़ते सदस्यों के लिए सभी आवश्यकताएँ जुटा पाने में समर्थ नहीं होता। अतः परिवार को नए आर्थिक स्त्रोतों की तलाश करनी पड़ती है। जब अपने गाँव या शहर में नयी संभावनाएँ कम होने लगती हैं तो परिवार की नयी पीढ़ी को रोज़गार की तलाश में अन्यत्र जाना पड़ता है। अब उन्हें जहाँ रोज़गार उपलब्ध होता है वही अपना परिवार बसाना होता है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं होता की वह नित्य रूप से अपने परिवार के मूल स्थान पर जा पाए। कभी-कभी तो सैंकड़ों किलोमीटर दूर जाकर रोज़गार करना पड़ता है। संयुक्त परिवार के टूटने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण नित्य बढ़ता उपभोक्तावाद है। जिसने व्यक्ति को अधिक महत्वाकांक्षी बना दिया है। अधिक सुविधाएँ पाने की लालसा के कारण पारिवारिक सहनशक्ति समाप्त होती जा रही है। और स्वार्थ बढ़ता जा रहा है। अब वह अपनी खुशियाँ परिवार या परिजनों में नहीं बल्कि अधिक सुख साधन जुटाकर अपनी खुशियाँ ढूँढ़ता है।

9. कुछ समय पहले की बात है। देश की सीमा के किनारे बसे एक गाँव पर कुछ आतंकवादियों ने कब्जा कर लिया और वहाँ लूटपाट मचा दी। सैनिकों को सूचना मिली तो वह तुरंत ही उनसे निपटने के लिए चल पड़े। बरसात का मौसम था, घनघोर वर्षा हो रही थी। इसके कारण छोटे-छोटे ताल-तलैया भी खूब विशालकाय नज़र आ रहे थे। छोटी-सी नदी भी उफान मारती हुई बह रही थी। जिसके कारण नदी पर बने पुल टूट गए थे। सैनिकों को वह नदी पार करनी थी, मगर पार कैसे करते? सैनिकों ने कई प्रकार की युक्तियाँ लगाई किंतु वह पार पाने में असमर्थ रहे। सैनिकों ने देखा कि पास में एक झोपड़ी है उससे सहायता माँगी जाए, सैनिक उस झोपड़ी में गए। उस झोपड़ी में एक महिला रहती थी। उस महिला के पास अन्य कोई साधन या घर नहीं था। सैनिकों ने जब सारी बातें बताई कि आतंकवादी गाँव पर कब्जा कर चुके हैं और हमें फौरन वहाँ पहुँचना है। इसके लिए यह नदी पार करने के लिए कुछ लकड़ियों की हमें आवश्यकता होगी, जिससे हम नदी को पार कर पाएँगे। महिला ने पहले कुछ सोचा फिर कहा कि अपनी झोपड़ी मैं दोबारा बना लूँगी। आपको जितनी भी लकड़ी मेरी झोपड़ी से चाहिए निकाल लीजिए। महिला की इस भक्ति से सैनिक गद्गद हो गए और यथाशीघ्र ही नदी पर एक पुल का निर्माण किया गया। जिससे सभी सैनिक नदी के पार उतर गए। महिला की इस देशभक्ति की सराहना जितनी की जाए उतनी ही कम है। सैनिक जल्दी ही उस गाँव में पहुँच गए, जहाँ आतंकवादियों ने कब्जा किया हुआ था। सैनिकों ने काफ़ी मशक्कत के बाद कुछ आतंकवादियों को मार गिराया और कुछ को गिरफ़्तार कर लिया। परिणामस्वरूप देश में आने वाले एक बड़े संकट को उन्होंने बहादुरी से टाल दिया और दुश्मनों को सबक सिखाया।

10. हमें यह मानकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए कि इस धरती पर हमारे माता-पिता ही साक्षात ईश्वर रूपी अंश हैं। माता-पिता की सेवा करना ईश्वर की आराधना का दूसरा नाम है। आज माता-पिता को गंगाजल नहीं, केवल नल के जल की जरूरत है। यदि हम समय पर उनकी प्यास बुझा सकें तो इसी धरती पर स्वर्ग है। यह विचार शहर के मंदिर में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा

के दौरान पंडित संजय वत्स जी महाराज ने व्यक्त किए। उन्होंने प्रवचन के दौरान कहा कि एक संत ने पवित्र गंगाजल भगवान शिव पर चढ़ाने की बजाय गरमी से तड़पते एक बैल को पिला दिया था। जिससे भगवान ने उन्हें दर्शन देकर उनका उद्धार किया। उन्होंने कहा कि हमें भगवान से संसाररूपी धन नहीं बल्कि माता-पिता के दीर्घायु होने का आशिर्वाद माँगना चाहिए और माँगना चाहिए कि हे प्रभु, मेरा चित्त निरंतर आपके चरण कमलों में लगा रहे। मैं आपको कभी भूलूं नहीं। श्रीकृष्ण की लीलाएँ अनंत हैं, उनकी महिमा अपार है। उन्होंने कहा कि इस कथा का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि जीव और परमात्मा के बीच अज्ञान व वासना का पर्दा है। वासना का विनाश होने पर ही कृष्ण मिलन संभव है। हृदय में ज्ञान का दीपक जलाने वाले गुरुदेव साक्षात भगवान ही हैं। और हमारे माता-पिता से बढ़कर और कोई दूसरा सद्‌गुरु नहीं है। उन्होंने आगे बताया– इस संसार में कई लोक हैं। भूलोक के चारों ओर अनेक द्वीप व समुद्र हैं। इन सभी में लाखों जीव निवास करते हैं। इन जीवों को भगवान से ही गति मिल रही है। जीव चाहे कितना भी बड़ा हो या फिर छोटा हो, जब तक उसमें प्राण हैं तभी तक वह जिंदा रह सकता है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

खंड-क

1. (क) लोग प्राय: गीता के इस उपदेश की चर्चा करते हैं कि कर्म करें, फल की इच्छा न करें।

(ख) इस गद्यांश में कर्म के बारे में कहा गया है कि कर्म के मार्ग पर आनंदपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म करते हुए उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनंद में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया।

(ग) जब किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार हो जाता है तो वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता रहता है, तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है, प्रत्येक नए उपचार के साथ आनंद का उन्मेष होता रहता है। यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता।

(घ) प्रयत्न की अवस्था में मनुष्य किसी भी कार्य को करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करता है तथा अप्रयत्न की स्थिति में मनुष्य उसी कार्य को देखकर उसे करने का प्रयास ही नहीं करता एवं रोता हुआ बैठा रहता है।

(ङ) कर्म करने वाला मनुष्य आत्मग्लानि के दुख से बचा रहेगा, जो उसे जीवन भर यह सोच-सोचकर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

(ङ) गद्यांश का शीर्षक है– "कर्म का महत्व"।

खंड-ख

2. (क) भाषा के वे छोटे-छोटे अर्थवान खंड, जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं और मूल शब्द के अर्थ में बदलाव ला देते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं; जैसे–प्र + चार = प्रचार, आ + हार = आहार, उप + हार = उपहार यहाँ 'प्र', 'आ' और 'उप' उपसर्ग हैं।

(ख) (i) अनु – अनुकूल, अनुचर।

(ii) अप – अपयश, अपमान।

3. (क) 'प्रत्यय' वे शब्दांश होते हैं, जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं तथा मूल शब्द के अर्थ में बदलाव या विशेषता लातें हैं; जैसे–मित्र + ता = मित्रता, लिख + आवट = लिखावट, फल + वाला = फलवाला, रंग + ईन = रंगीन।

(ख)

	शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
(i)	सामाजिकता	समाज	इक, ता
(ii)	दर्शनीय	दर्शन	ईय

4. (क) (i) रोगमुक्त – तत्पुरुष समास

(ii) मालगोदाम – तत्पुरुष समास

(ख)

	समस्त पद	**विग्रह**	**समास**
(i)	पुस्तकालय	पुस्तकों का आलय (घर)	संबंध तत्पुरुष समास
(ii)	पंचवटी	पाँच वटों (वृक्षों) का समूह	द्विगु समास

5. (क) अर्थ की दृष्टि से वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं–

(i) विधानवाचक वाक्य, (ii) निषेधवाचक वाक्य, (iii) प्रश्नवाचक वाक्य, (iv) आज्ञावाचक वाक्य, (v) विस्मयादिवाचक या विस्मवाचक वाक्य, (vi) इच्छावाचक वाक्य, (vii) संदेहवाचक वाक्य, (viii) संकेतवाचक वाक्य।

(ख) (i) संदेहवाचक वाक्य

(ii) इच्छावाचक वाक्य

(ग) (i) सूर्य निकल आया है।

सूर्य अभी नहीं निकला है।

(ii) फ़सलें पक गई हैं।

क्या फ़सलें पक गई हैं?

(घ) (i) उसके व्यवहार को सभी जानते हैं।

(ii) क्या उसने अपना काम पूरा कर लिया?

6. (क) (i) यमक अलंकार

(ii) श्लेष अलंकार

(ख) विमल वाणी ने वीणा ली कमल कोमल कर में सप्रीत।

(ग) कनक-कनक तैं सौ गुनी मादकता अधिकाय।

खंड-घ

प्रश्न सं॰ 7, 8, 9 एवं 10 छात्र स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–2

खंड-क

1. (क) गद्यांश के अनुसार, आज के समय में मन को काबू में रखना सबसे कठिन है, पर यही सबसे आवश्यक है।

(ख) हमारी ज़िंदगी में मोबाइल फ़ोन, लैपटॉप या आईपैड शामिल हो जाने की वजह से अनौपचारिक बातचीत बंद हो गई है।

(ग) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अकसर मौन-व्रत रखा करते थे।

(घ) आजकल आप मोबाइल फ़ोन, लैपटॉप या आईपैड पर गेम, ईयरफोन लगाकर गाने आदि सुनने की वजह से दूसरों से बातचीत बहुत कम करते हैं।

(ङ) मनोवैज्ञानिक सैमुअल जॉनसन मानते हैं कि जो ज़िंदगी की छोटी-छोटी परेशानियों और तनाव में आकर खुद को उलझा लेते हैं, वे अपनी ज़िंदगी को बिना पतवार की नाव बना देते हैं।

(च) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'मौन-व्रत' या मौन रहकर अपनी आंतरिक शक्ति को संचित करना है।

खंड-ख

2. (क) शब्द-निर्माण की प्रकिया निम्नलिखित तीन प्रकार की होती है–

(i) उपसर्ग द्वारा; जैसे– आ + जीवन = आजीवन

(ii) प्रत्यय द्वारा; जैसे– मित्र + ता = मित्रता

(iii) समास द्वारा; जैसे– जीवन और मरण = जीवन-मरण

(ख)

	शब्द	**उपसर्ग**
(i)	निवृत्त	नि
(ii)	विशुद्ध	वि

3. (क) उपसर्ग और प्रत्यय दोनों के प्रयोग से नए शब्दों की रचना की जाती है। इसके अलावा दोनों ही लघुतम शब्दांश होते हैं।

(ख)

(i)	एँ–कन्याएँ	इयाँ–नदियाँ
(ii)	अन–ढक्कन	ई–बुहारी

4. (क) समास का अर्थ है– संक्षिप्त करना या संक्षेपीकरण; जैसे– हर गली में– गली-गली।

(ख) तत्पुरुष समास में उत्तर पद प्रधान होता है।

(ग)

	विग्रह	**समस्त पद**	**समास**
(i)	सिंह रूपी नर	नरसिंह	कर्मधारय
(ii)	दिन-ही-दिन में	दिनोंदिन	अव्ययीभाव

5. (क) वाक्य-भेद निम्नलिखित दो आधार पर किए जाते हैं–

(i) अर्थ के आधार पर तथा

(ii) रचना के आधार पर।

(ख) (i) इच्छावाचक वाक्य

(ii) प्रश्नवाचक वाक्य

(ग) (i) संभवतः पप्पू पास नहीं हो सका।

यदि पप्पू परिश्रम करता तो पास हो जाता।

(ii) रचना पाठ याद कर रही है।

रचना, पाठ याद कर लो।

(घ) (i) यदि आज शाम चाँद दिखाई देगा तो कल विद्यालय में छुट्टी होगी।

(ii) अरे! यह हाथी बहुत बड़ा है।

6. (क) (i) उपमा अलंकार

(ii) रूपक अलंकार

(ख) कालिंदी कूल कदंब की डारन।

(ग) मंगन को देख पट देत बार-बार है।

(घ) जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय,
बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय।

खंड-घ

प्रश्न सं॰ 7, 8, 9 एवं **10** छात्र स्वयं करें।